5620

सुड़ा-सँगेन

(नव-पल्लव)

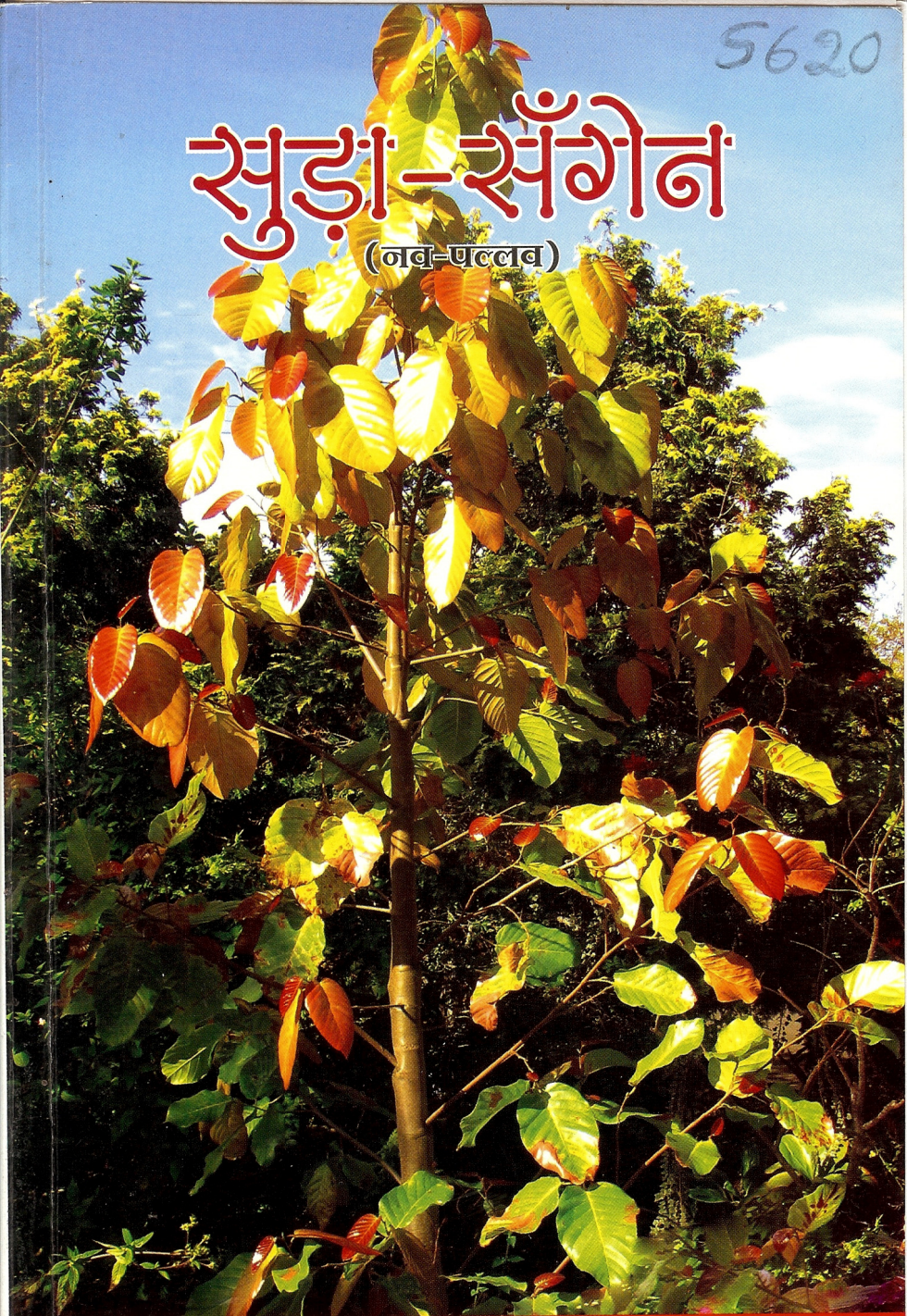

दुलाय चन्द्र मुण्डा

सुड़ा-सँगेन

(नव-पल्लव)

कवि

दुलाय चन्द्र मुण्डा

सत्यमेव जयते

अधीक्षक, सचिवालय मुद्रणालय, बिहार
राँची द्वारा मुद्रित, 1966

लेखक द्वारा प्रकाशित एवं सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 80/-

प्रकाशन वर्ष : 2012

मुद्रक : आई. डी. पब्लिशिंग, राँची

मिद् टुङ

अञ: जगर को सिंगर सम्पोड़ो केयाते पुथी रे छपवो तन लेल केत् ते मोन रे पुर: गे रसिकञ अटकर जदा। ने "सुड़ा-संगेन" सुड़ा संगेन बारि गेया। नेरे नागें बा रेय: सोबन मेन: आर नागे सकम रेय: हेन्दे हरियर। इमिन रेयो ने सुड़ा संगेन जाँ लेकते संगेनो: गेया; चिय:चि इसु सोञ्जोकोते ने रोड़ दारु रे सुड़ा उडुडा कना।

सोबेन दुरङ् कोरेय: हिन्दी मानेयो ओम कना। नेया दुरङ् को हिन्दी जगर रे बादला रे सुगड़ आदित्य मित्र संताली, सुगड़ कड़िया सारू ओड़ो: सुगड़ नारायण प्रसाद सिन्हा, नेलेकन सोंगे कोव: देंगा नमा कना आर एनामेन्तेगे नेय निमुनुङ् सुगड़ बैया कना। ने सोंगे कोव: नेय देंगा चिउलव का रिड़िङो:वा।

कितब नतिन बरिया लेका कजि को ओल रिका रेय: दरकार तैकेना। सुगड़ जगदीश त्रिगुणायत, साहित्य समड़ोमेञ कोय कि:या और इनियो: अय: गोनोङान सोमय नेया ओलरे: लगव केदा। अञ अय: कटा रेञ तिरू बेन तना।

"सुड़ा संगेन" छपवोतन: अयुस केत्ते साहित्य प्रेमी ओड़ो: सेणान् होड़ो को स:ते अकोव: सुगड़ सनङ आशीर्वाद को अञ त: हिजु: जना। एना कोरे डॉ. ललिता प्रसाद विद्यार्थी (राँची), सुगड़ भैया राम मुण्डा (राँची), सुगड़ आदित्य मित्र संताली (राँची) ओड़ो: सुगड़ राम दयाल मुण्डा (शिकागो, अमेरिका) तकोव: को मेन: आर नाको नेय: रेयोञ ओम तदा। नवा जिनिद् ओम को नगेन अञ "अञ: मेद्दः रे बोरसा मेसा तम" आते एट: कजि कञ सनङ तना।

टुण्डुरे, अञ ओकोवा कजि कोते कल्याण विभाग, बिहार सरकारेञ लेकऐया ओकोय चि सरतीगे ने दुरङ को हतु रेय: अखड़ातें दिसुम रेय: अखड़ा रे: तेब: तदा। निय: मनरङ कजि कोरे कञ तोल दड़िय:।

राँची :
28 मार्च, 1966।

दुलायचन्द्र मुण्डा

हिन्दी

एक शब्द

अपनी वाणी को सजधज के साथ पुस्तक रूप में प्रकाशित होते देखकर मन में बड़ी प्रसन्नता हो रही है। यह ''नव पल्लव'' केवल नव-पल्लव है; इसमें न फूलों की सुगन्धि है और न पत्तों की हरियाली। तोभी यह नव-पल्लव किसी न किसी रूप में तो विकसित होगा ही; क्योंकि बहुत मुश्किल से इस सूखे वृक्ष में पल्लव लगे हैं।

सभी गीतों के हिन्दी अर्थ भी दिए हैं। इन गीतों के अनुवाद करने में श्री आदित्य मित्र सन्ताली, श्री कड़िया सारू और श्री नारायण प्रसाद सिन्हा ''जहानावादी'' जैसे साथियों का भरपूर सहयोग मिला है और इसी का परिणाम है कि यह इतना सुन्दर बन सका। इन साथियों का यह सहयोग चिर स्मरणीय रहेगा।

पुस्तक के लिए भूमिका की जरूरत थी। मैंने इसके लिए श्री जगदीश त्रिगुणातय, सहित्यरत्न के सामने अपनी झोली फैलाई और उन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर इस कमी को पूरा किया। मैं इनके चरणों में सिर नवाता हूँ।

''सुड़ा-संगेन'' के प्रकाशन की खबर पाते ही साहित्य प्रेमियों और विद्वान लेखकों की ओर से अपनी-अपनी सम्मतियाँ और आशीर्वचन मेरे पास आने लगे। इनमें डॉ0 ललिता प्रसाद विद्यार्थी (राँची), श्री भैया राम मुण्डा (राँची), श्री आदित्य मित्र संताली (राँची) और श्री राम दयाल मुण्डा (शिकागो, अमेरिका) की सम्मतियाँ हैं, जिनको मैंने इस प्रकाशन में दे दिया है। नव जीवन प्रदान करनेवाले इन विद्वानों के प्रति ''मेरे अश्रु में आशा भरी है'' के अलावे कुछ नहीं चाहता।

अन्त में, मैं किन बातों से कल्याण विभाग, बिहार सरकार की प्रशंसा करूँ जिसने सचमुच ही इन गीतों को गाँव के अखाड़े में दुनिया के अखाड़े में पहुँचा दिया है। इनकी महानता को मैं बोली में बाँध नहीं सकता।

—दुलाय चन्द्र मुण्डा

दो शब्द

भारत के ढाई करोड़ आदिवासियों में मुण्डा जाति का महत्वपूर्ण स्थान है। मध्यप्रदेश के आदिवासियों में सबसे अधिक इसी के पास मौलिक संस्कृति सुरक्षित है।* आदिवासियों के स्वतन्त्रता प्रेम का, यही जाति सर्वोत्तम प्रतीक रही है। भारत के जंगली भागों में अनेक कबीलों द्वारा बोली जाने वाली आग्नेय परिवार की भाषाओं का इसी के नाम पर— मुण्डा भाषायें, नामकरण हुआ है।

मुण्डा यद्यपि मध्य प्रदेश, उड़ीसा और बंगाल में भी बसे हैं; किन्तु उनकी जनसंख्या का सर्वाधिक भाग बिहार में ही है—उसमें भी राँची जिले के खूँटी सबडिवीजन में। खूँटी के कुछ भागों में मुण्डा ऐसे अविमिश्रित और असम्पृक्त रूप में रहते आए हैं कि यहाँ के कुछ क्षेत्रों के लोग मुण्डारी छोड़कर दूसरी कोई भाषा नहीं जानते।

यद्यपि मुण्डा का जीवन हजारों वर्षों से अभावों में ही पलता रहा है— इतने अभावों में कि कृषि का सहारा लेकर भी उन्हें जीविका की कमी शिकार और खाद्य-संकलन के प्रारंभिक साधनों से पूरी करनी पड़ती रही है, किन्तु ये सदा से स्वतंत्रता के प्रेमी और संस्कृति के धनी रहे हैं। नृत्य-गान उनकी संस्कृति के मूल-तत्व हैं और थोड़ा-सा खा-पीकर अधिक सन्तुष्ट रहना उस संस्कृति की विशेषता है।

कालान्तर में उनके स्वच्छन्द जीवन में अन्य समुदायों के हस्तक्षेप में न तो इनकी स्वतंत्रता निरापद रही न संस्कृति। उनका आर्थिक शोषण तो हुआ ही, अंगरेजी शासन के नित्य नवीन अभिषापों से तो कभी-कभी उनका अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया। किन्तु जब-जब अत्याचार और अनीति का घड़ा भरा, छोटानागपुर के आदिवासियों ने तब-तब अपने शासकों और शोषकों पर अपने स्वतंत्रता-प्रेम का सिक्का बैठाकर छोड़ा। मुण्डा के इसी स्वतंत्रता प्रेम ने भारतीय आदिवासी के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष बिरसा भगवान को जन्म दिया।

भारत को मिलनेवाली आजादी ने सारे देश के साथ मुण्डा को भी उसकी चिरवांछित स्वतंत्रता प्रदान की। नये कानूनों ने उसे शोषण से बचाने और नये विकास कार्य-क्रमों ने उसकी अशिक्षा और गरीबी को मिटाने की दिशा में प्रयत्न किये जिसका सिलसिला अब भी जारी है। किन्तु साँस्कृतिक संरक्षण का समुचित प्रयत्न अबतक किसी के द्वारा नहीं हुआ। शिक्षा की चका-चौंध और सम्पर्कों के वात्याचक्र

में पड़ी हुई स्वयं आदिवासी की नई पीढ़ी ने भी पहले धक्के में हथियार ही डाले।

किन्तु अब वह होश में आ रही है। अपनी संस्कृति की रक्षा की चिन्ता उसे सचेत कर रही है।

मुण्डा साहित्य की पुरानी डालों पर एक लम्बी अवधि तक पतझड़ की उदासीनता मनाकर अब नये पल्लव विकसित होने लगे हैं, नये फूल खिलने लगे हैं, इनका अपना 'सरना समाज' इन्हें जगा रहा है, ''सरना-सकम'' (पत्रिका) के नव पल्लवों में इनके स्वर की रूठी हुई कोयल फिर अपनी काकली सुनाने लगी हैं। इन्होंने अनेक बार काव्य-साहित्य की प्रतियोगिताऐ आयोजित की हैं। आकाशवाणी इनके नये स्वरों से स्वरित और क्षेत्रीय पत्र-पत्रिकायें इनके नूतन शिक्षा से अनुरंजित होने लगी हैं। राँची के कवि-सम्मेलनों में इनके भी गीत अपना उचित स्थान ग्रहण करने लगे हैं। तीन चार वर्षों में इनकी कई पुस्तकें प्रकाश में आयी हैं और बीसों कुंवारी पाण्डुलिप्पियाँ पीली साड़ी की बाट जोह रही हैं।

मुण्डा की नई पीढ़ी के कवियों में श्री दुलाय चन्द्र मुण्डा का स्थान अन्यतम है। सादगी, सरलता, अति संकोच और विनम्रता की प्रतिमूर्ति यह सुशिक्षित नवयुवक अपनी कविताओं में भी उतना ही सरल, संकोची और विनम्र है।

श्री दुलाय के गीतों में मिट्टी की वही गन्ध, जंगलों में वही हरियाली और झरनों का वही संगीत विद्यमान है जो सदा से मुण्डा गीतों की विशेषता रही है। विषय-वस्तु और शिल्प दोनों पक्षों में ये अपनी परम्परा के अत्यन्त निकट हैं। वे ही उपमान, वे ही प्रतीक, पंक्तियों की वही पुनरावृत्ति, वे ही छन्द जिन्होंने सारी मुण्डा कविता का श्रृंगार किया है इनकी कविता का भी श्रृंगार कर रहे हैं।

फिर भी इनके गीतों में ताजगी है। पुराने स्वरलय के ये गीत नितान्त नवीन लगते हैं। इनकी अनुभूतियों में गहराई तो है ही, नये प्रयोगों ने इन गीतों में पर्याप्त सौन्दर्य और प्रभाव भर दिया है।

ये सबके सब गीत गेय हैं। कलम की नोक पर उतरने के पहले ये कंठ में स्वरित हुए हैं और प्रकाशन के पहले अनेक गाँवों के अखाड़ों की शोभा बढ़ा चुके हैं।

किन्तु, मुण्डा कविता अब जीवन की नई घाटी में प्रवेश करके अपने प्रवाह को विस्तृत करने के लिये रहा खोज रही है। जैसा कि नये जीवन की मांग है, अब उसमें

शुभकामना

स्वतंत्रता के पश्चात् सरल, स्वस्थ एवं एकान्तवासी आदिवासियों ने भी अँगड़ाई ली है। राजनैतिक जागरण के साथ-साथ उनके समाज में आर्थिक, सामाजिक एवं बौद्धिक परिवर्तन भी शनैःशनैः होना प्रारम्भ हो गया है। आज बिहार की प्रमुख जन-जातियों-संताल, मुण्डा, हो, उराँव, खड़िया आदि में हमें कुछ ऐसे व्यक्तियों से भेंट होती है, जिन्होंने सभ्यता के सोपान पर उठते हुए राजनैतिक, धार्मिक, साहित्यिक, कलात्मक एवं अन्य बौद्धिक विषयों में अपना चमत्कार दिखलाया है। श्री दुलाय चन्द्र मुण्डा उन्हीं इने-गिने आदिवासी युवकों में हैं जो साहित्य के क्षेत्र में अपनी 'परम्परा' की कड़ी को 'आधुनिकता' से सम्बद्ध करने में तन-मन से लगे हैं। उनकी कविता का प्रस्तुत संकलन 'नव पल्लव' में मैं विकसित होने वाला पुष्पित एवं फलित बटवृक्ष का दर्शन करता हूँ जो निश्चय ही साहित्योद्यान में अपना महत्व रखेगा।

'नव पल्लव' हमारे लिए अनेक दृष्टियों से उल्लेखनीय तथा अभिनन्दनीय है। इस कविता संग्रह में हमें एक मुण्डा नवयुवक के साहित्यिक विकास की आत्म कहानी पढ़ने को मिलती है। प्रकृति की गोद में स्थिर मुण्डा गाँव के वातावरण में पलित तथा अखाड़े में लोक-गीत का राग आलापने वाले कवि की कविता में जहाँ एक ओर परम्परा के प्रति आकर्षण है वहाँ दूसरी ओर उनमें परम्परा से दूर भागने की चिन्ता भी। कभी उसे शहर में ''चम्पा फूल तोड़ने का मन करता है'' (गीत न. 80) तो कभी गाँव में ''युवतियाँ नहीं निकलती, जदूर नाच कैसे होगा'' (गीत संख्या 24) का पश्चाताप होता है। फिर एक ओर जहाँ कवि आदिवासी समाजानुकूल श्रृंगारिकता की धारा में ओत-प्रोत है वहाँ दूसरी ओर वह 'भूख और जाड़ा से तबाह' होकर क्रन्दन करता हुआ सरस्वती से सुबुद्धि की भी कामना करता है।

यह मुण्डा सरीखे कवि का ही अनायास काम है जिनमें अपनी संस्कृति और समाज का प्रतिनिधित्व अपनी कविताओं में किया है। कहना न होगा कि हम उनके इस 'नव पल्लव' में उनकी मधुर भाषा, अपने लोक साहित्य के प्रति अटूट प्रेम, परम्परागत समाज के प्रति अगाध कृतज्ञता तथा सामाजिक परिवर्त्तन की नई दिशा का दर्शन करते हैं।

परम्परागत विषयों से आगे बढ़कर जीवन के नये मार्ग पर उठते हुए चरणों की थाप सुनाई देने लगी हैं। समाज के विकास के साथ, साहित्य के क्षेत्र, तदनुरूप साहित्यकार के उत्तरदायित्व भी बढ़ते जाते हैं। अब सिर्फ पुराने गीत नये समाज की प्यास नहीं बुझा सकते। समाज की नई आकांक्षायें कवि-लेखक से अपनी अभिव्यक्ति मांग रही है और जीवन के नये प्रश्न अपने उत्तर के लिये उसे चुनौती दे रहे हैं।

श्री दुलाय का यह पहला गीत संग्रह है। स्वभावत: उनमें जवानी के प्रारंभिक स्वप्नों ने ही स्थान बनाये हैं। किन्तु इन सुकुमार और मनोहर गीतों द्वारा उन्होंने अपनी सामर्थ्य सिद्ध कर दी है। और जब वे अपनी बांसुरी बजाते-बजाते घाटी से चोटी की ओर बढ़ आये हैं तो उनकी आकृति दूर-दूर से भी दिखाई देने लगी है। इसीलिये उन्होंने, नये समाज की आकाँक्षाओं के अनुरूप अधिकाधिक प्रौढ़ रचनाओं के निमित्त अपने काव्य-प्रेमियों की आशा बढ़ा दी है।

राँची :
14 मार्च, 1966

जगदीश त्रिगुणायत

शुभकामना—

बा-जगर सोवन

(पुष्प-भाषा सौरभ)

हेला हो हगञ तम,
बा दरु सुगड़ तम।
गोसो जन मोरसो जन,
सकम सोबेन उरुडु जन।।
"एना चि होम उडु: तन,
सुड़ाओगेया, संगेनो: गेया",
दुलय माली कजिकेद् गेया।।
बा दरु सयद् केद्
बो: गेचए ओमोड केद।
कुड़म होए केटे: केद्।।
नेलेका सुगड़ बा,
निदा सिंगि सोवन बा।
बनो: गेहो बनो: जन,
मुंडि गेचा अञ्जन।।
बा दरु बियुर ते चा,
कोड़व केद् बुटा गेचा।
ओम केद् सरा गेचा,
पटव केद् माली गेचा।।
सुड़ा जना संगेन जना,
मोंय जना बा जना।
बा सोवन सोवन जना,
नवा मालीम उरुम जना।
होड़ो जगर बा दरु,
दरु कोरे सुगड़ दरु।
जोतोनकम ने बा दरु,
नेयागे अञ सनड तन।।

राँची :
26 मार्च, 1966।

भैयाराम मुण्डा

अतएव इन विशेषताओं के कारण 'नव पल्लव' केवल साहित्यकों के लिए ही नहीं, बल्कि आदिवासी संस्कृति के अन्वेषकों के लिए भी एक महत्त्वपूर्ण और उपयोगी कृति है। श्री दुलाय चन्द्र के शिक्षक होने के नाते मैं आशा करता हूँ कि 'नव पल्लव' के 'सौ गीत' कालान्तर में सौ पुस्तकों के रूप में पुष्पित और फलित होंगे। यही हमारा आशीर्वचन है।

डॉ. ललिता प्रसाद विद्यार्थी,
विभागाध्यक्ष,
मानव विज्ञान विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

ललित निकेतन, राँची :
24 मार्च, 1966।

सन्ताली कवि की शुभकामना

''सुड़ा सँगेन'' के गायक श्री दुलायचन्द्र मुण्डा अपने समाज के प्रतिभाशाली प्रसून हैं जिनकी सुरभि गाँव के अखाड़े से लेकर भारतीय समाज के सार्वजनिक जीवन में भी घुलमिल जायगी, इसमें कोई सन्देह नहीं। इनकी सारी कविताएँ गेय हैं और कवि के मधुर कण्ठ से भी समय-समय पर सुनने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। यह कहने में संकोच नहीं कि इनकी कविताएँ जानदार और शानदार होती हैं। इनके भाव हृदय को छू लेने की शक्ति रखते हैं। इनकी कविताओं में जन और युग की स्पष्ट छाप है जिनसे कोई भी व्यक्ति मुण्डा समाज के हृदय से भलीभाँति परिचित हो सकता है। खुशी की बात है कि सभी कविताओं के अर्थ हिन्दी में भी दिये गये हैं।

मैं श्री दुलायचन्द्र मुण्डा को मुण्डारी भाषा के अग्रणी कवि के रूप में वर्षों से जानता हूँ। वर्षों से वे मेरे अन्तरंग मित्र रहे हैं। वैसे ही इनकी कविताओं से भी मेरा परिचय वर्षों का रहा है। जिस प्रकार श्री मुण्डा का व्यक्तित्व सरल, सौम्य और भावुकता से भरपूर तथा आकर्षक है, उसी प्रकार इनकी कविताएँ भी मन को बरबस आकर्षित कर लेती हैं। अच्छी कृति के लिए किसी प्रकार के विज्ञापन की आवश्यकता नहीं है, वह स्वयं अपने आप में विज्ञापन है।

जब मुझे श्री दुलाय चन्द्र मुण्डा की प्रथम कृति ''सुड़ा संगेन'' के रूप में देखने का अवसर मिला तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। इस प्रथम कृति के लिए श्री दुलाय चन्द्र मुण्डा धन्यवाद के पात्र हैं। भविष्य में हमें इनसे बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं। मैं उनकी सफलता की कामना करता हूँ।

आकाशवाणी,

राँची 15वीं फरवरी, 1966

आदित्य मित्र संताली

शुभकामना

अबेन: मोणे हिसि ओनोल को सिदा-सिदाते ''सुड़ा सँगेन'' रेय: रूप रे मरशलो: तना, नेया इतु केत्ते इसु रसिकगे अटकरो: तना। अबेन पुर: गे जोकवो नुतुम बेन सला कदा, आर सोञ्जोकोरे ''सुड़ा सँगेन'' दिपिला कोरेगे ने ओनोल को उड़डो:तना।

कलम रेय: हुड़िञ् ठंवाते ने दुरङ् को अखड़ारेय: जिलिञ् चकर ठँव रे हिजु: तना। ने दुरङ् को अखड़ा दुड़ा लो:गे मुण्डा साहित्य रेय: भाव-भंडार रे नमन मियद् नवा तेय: लेका हिजुगा, नेकाअञ: विश्वास मेन:।..... ओड़ो: अञ: सुगड़ सनङ् कोदो अबेन लो: रेगे मेन:

हिन्दी—

आपकी प्रथम सौ रचनाएँ ''सुड़ा सँगेन'' के रूप में प्रकाशित हो रही हैं यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है। आपने बड़ी ही उपयुक्त नाम चुना है और संगोम कि ''सुड़ा सँगेन'' के दिनों में ही ये रचनाएँ निकल रही है।

लेखनी की छोटी सीमा से ये गीत अखाड़े के विस्तार में आ रहे हैं। अखाड़े की धूल के साथ ही ये गीत मुण्डा साहित्य भाव-निधि में एक नयी उपलब्धि के रूप में आयेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। ..... फिर हमारी सारी शुभकामनाएँ तो आपके साथ हैं।

राम दयाल मुण्डा
साउथ एशिया लैंग्वेज एन्ड एरिया सेन्टर,
युनिव्हर्सिटी आफ शिकागो,
1130 ईस्ट, 59वाँ स्ट्रीट, फोस्टरहाल,
शिकागो, इल्लिन्वयस 60637,
यू0 एस0 ए0

शिकागो :
7वीं फरवरी, 1966

सुड़ा सँगेन

प्रो0 दुलाय बाबू 1966 ई. कोरे दो मिअद् अका मका नव दंगड़ा दुरं हरिआए तइकेना। एन लेकाते इनिआ: उड़ु: विचारो नव गे तइकेना। एना तेगे जा: अएँआ: दुर्र पुति सुड़ा संगेने: लुतुम केदा। चिलका चि सुड़ा मोतोलोम नव सकम आद संगेन माने मोला सकम कजिओ: तना। नेआ कमि दो अए तेगे जनाओ सिरमा सा तेबा: जनचि होबा इदि तना। ने लेकागे अबुआ: समाज रेन नव दंगड़ा दंगड़ी को सुड़ा संगेन लेका नव सेंड़ा को नमेका आद पुरना एतकन दस्तुर को को बगेका, दुरं हरिआ नेआगे दुरं होराते: उदुब तना। ने बुगिन कमि बुगिन उड़ु: मेनते अञ सा:ते पुरा: पुरा: जोआर आद माइन नमो: का।

प्यारी टुटी
जोजो टोली, खूँटी

बुगिन आसराए को

बोंगा जान दुलाय बाबुआ: ने दुरंग किताब 'सुड़ा संगेन' रे 100 दुरंग को ओला काना। किताब लेल लेरे आटकारो: ताना चि जा: 'सुड़ा संगेन' आर 'बम्बरू' आयार तायोमे: ओल ला:। 'सुड़ा संगेन' सिदा 1966 रे आर बम्बरू 1978 रे। नेरे सामाज रे चालावा कन राग कोरे गे दुरंग ओला काना। मगर नेरे दुलाय बाबुआ: जी, बिर सेंगेल लेका लो ताना। कुड़ाम ओते लेका फाड़ा: ताना। ने किताब रे एना दुकु कोगे रुईद तान लो:ए उदुबा का: बुआ।

मानोवा जी दो बा-साकाम लेका सुड़ा ताना, मायला ताना आर उरुडु गिड़ि ताना।
दुरंग हारिया ईयाम ताना—
ओह!
बा लेकाम आला लेन गातिंग
बा लेका गेम गोसो जाना:....

मंगल सिंह मुण्डा
खूँटी

अनुक्रमणिका

जदुर

गीत संख्या	गीत की पहली पंक्ति		पृष्ठ
1.	हस होड़ोमो चि डोन्डो होड़ोमो	.....	1-2
2.	भारत वृन्दा बिर रे-बा आलाजन	.....	2-3
3.	सिउ: चलु तबु पुरना कमी	.....	3-4
4.	दिसुम समुन्दर दो जिलिमिलिय	.....	4-5
5.	बुरू दोको जुण्डी केद पुतम्....	.....	5-6
6.	सराजोम बा दो अजिना	.....	6-7
7.	अपे दो दिकु सिपई को	.....	7
8.	बिरेते सेन्देरा होञ् सेने केन	.....	8-9
9.	सिउ: चलु बुगिना चि	.....	9
10.	तिकिन सिंगी बुरुञ् रकब लेन	.....	10-11
11.	दुगदा बुरु तेहोञ् रकब लेन	.....	11-12
12.	पुन्डी सयोबेको सेनो: जन...	.....	12-13
13.	सालू सुगा, सालू मैनो रे...	.....	13-14
14.	बिरे तेञ् सेने केन दारु कोञ् लेलद्	.....	14-15
15.	ने ओते दिशुम तल रे ...	.....	15-16
16.	एल रे बारु सुड़ गतिङ् ...	.....	16-17
17.	सोबेन मुली लेले लेरे ...	.....	18
18.	तल होरा रेबु नपम् जन ...	.....	19
19.	बारु सुड़ा दो जेंगेद्-जेंगेद्	.....	19-20
20.	हियातिङ् रेयो मइनम् चका तिङ् रेयो	.....	20-21
21.	जरपी सुसुन् दो दइना सुसुन् सेनो: तन	.....	21
22.	बरँगु बा रेदो होनङ् चम्पा बा रेदो	.....	22
23.	असम सँगिन् दिसुम	.....	23-24
24.	दुगदा बुरु गेलिङ् रकब जन	.....	24-25

25.	सपड़तिङ होरा रे गतिङ् ...	.....	25-26
26.	दा: सोम् सड़ागीरे अयरा	.....	26-27
27.	मणि-मणि ते उड़ु: जीरे बोलोतन	.....	27
28.	इच: बा तेम चिगो मुरुद् बा तेमा	.....	28
29.	सोना लेकन् सराजोम् बए हिजु: लेन	.....	29
30.	इच: बा बा पिड़िद्-पिड़िद् ...	.....	29-30
31.	कुरी: हो कुद सुड़ गतिङ् दो	.....	30-31
32.	हिसिंगा-चेन्ट; मौरा-विषी	.....	32-33

ओर जदुर

33.	फागुन चन्डु: मुलु: जन	.....	33-34
34.	ओचो रेपे तेगया दुति तञ्	.....	34-35
35.	साधु लेका लोंका पोति ...	.....	35-36
36.	गेना—गड़ को जोबेला रे गतिङ्	.....	36-37
37.	कबु एपेरङ् कबु एपेसेद ...	.....	37
38.	जिलिमिलि तन् ने इपिल् ...	.....	38
39.	जदुर सुसुन् निरे दौड़ी दादा	.....	39-40
40.	बा लेकम् आला लेन गतिङ्	.....	40-41
41.	कुरू जाँगल दिसुम रे गतिङ्	.....	41-42

करम

42.	सिद रेय: चली-बाली	.....	42-43
43.	गड़ नेस: गड़ हन्स:	.....	43-45
44.	सके रे रुतु सड़ी तन	.....	45-46
45.	तिसिङ् अञ् दो इसु दुकु	.....	46-47
46.	ओहरे तञ् सुगड़	.....	47-49
47.	तिरि-रिरि रुतु ताल	.....	49-50
48.	ओको तेरे ओको छैला	.....	50-51
49.	बा बगैचा रे	.....	51-52
50.	नेते जरगी गम लेद	.....	52-53
51.	रोला डाड़ी रोला: रोलो:	.....	53-54
52.	बिर होरम् हिजु: लेन	.....	54-55

53.	ओकोरेन होड़ो इदो	.....	55-56
54.	उरी: चिरेम गुपी तन	.....	56-57
55.	अखोन्डो बिराते	.....	57-58
56.	चिक लेरे बैयो:व ...	.....	58
57.	बारुडीह जोजो टोलारे	.....	59
58.	ने खोलम् चिक जन	.....	59-60
59.	बुरु गड़ जप: रे	.....	61-62
60.	नेक-नेक गतिङ्	.....	62
61.	चिकन् होयो हिजु: लेन	.....	63
62.	तीरे दो साका चूड़ी	.....	64
63.	डुलकी लो: दुरङ् रे रसिक:	.....	65
64.	दुरङ्ो बु दुरङ् केद	.....	65-66
65.	बिर तबु चब तन	.....	66-67
66.	रुवड़:म् चि कम् रुवड़:	.....	68
67.	ने साल चिबु चिकजन	.....	69
68.	अबु सोबेन आदिवासी	.....	69-70
69.	ओको जोला रे गतिङ्	.....	70-71
70.	हिजु गञेम् मेन् तुकद	.....	72
71.	हग-हग पाग जन	.....	73-74
72.	पीटी-पीटी ककला जन	.....	74-75
73.	श्री वृन्दा बिर वितर	.....	75-77
74.	बुरु को सके रे	.....	77-78
75.	पेटे: पतड़ सकम् लेक	.....	78-79
76.	इसु दिन् बु होब जन	.....	79-80
77.	बा को बगैचारे	.....	81
78.	बा चन्डु: हिजु: लेन	.....	82-83
79.	होरा अतोम् चम्पा दारु	.....	83-84
80.	होरा अतोम् चम्पा दारु	.....	83-85
81.	होरा अतोम् चम्पा दारु	.....	85-86
82.	बिर बितर बा सुब	.....	86-88

83.	ओचो-ओचो मुकुन्द मुरारि	.....	88-89
84.	नेरे निःञ् हिय कन	.....	90
85.	बुरु को टिकुरा रे	.....	91-92
86.	चिमिनेम् दण लगन	.....	92-93
87.	जेटे सिंगी कले कले रे	.....	93-94
88.	जरगी दः तेबः जन	.....	95-96
89.	दाः दोरे गम तन	.....	96-97
90.	इचः रसी बा रसी	.....	97-98
	मागे		
91.	मोदे तुक होने को	.....	98-99
92.	बाबा एंग, कोदे एंग ...	.....	99
93.	लङ् चेणे! कलेगा	.....	100
94.	ने ईचाः बा दो	.....	100-101
95.	बा को बगैचारे	.....	101
96.	हेसः जरोम् चब जन मैनोजी	.....	101-102
97.	बिर सान् दो चब जन	.....	102-103
98.	मागे तन् मागे तन्	.....	103
99.	बुरु को टिकुरा रे	.....	104
100.	बुरु जपः जपः ते किंकोड़ो को इयम	.....	105

सोरोसोती विनोती

1. जदुर

हस होड़ोमो चि डोन्डो होड़ोमो
मानव को दो रे ले डोन्डो गेय।
हस होड़ोमो चि डोन्डो होड़ोमो
सुगड़ सेण कले नमन् गेया।

मानव को दो रे ले डोन्डो गेय
रेंगे:-रबङ् तेले हाय-हाय तन।
सुगड़ सेण कले नमन् गेय
सुगड़ सेन मा ले असरए तन।।

रेंगे: रबङ् ते ले हाय-हाय तन
निद सिंगी अम्ले गोहारी तन।
सुगड़ सेण मा ले असरए तन
कट सुब रेले तिरूबेन् तन।।

अमग: मनारङ् अर सुगड़ सेण
जेता लेक कजी रेयो क टुन्डु: गेय।
कट सुब रे ले तिरूबेन तन
अलेय: बिलिक रन: पुरय मेग ।।

—खूँटी, जनवरी, 1958।

(हिन्दी)

सरस्वती वन्दना

मिट्टी का शरीर जो मूर्खरुपी पुतला है,
हम मनुष्य अत्यन्त ही मूर्ख हैं।
मिट्टी का शरीर जो मूर्खरुपी पुतला है,
सुबुद्धि की हम में कमी है ।।

हम मनुष्य अत्यन्त ही मूर्ख हैं
भूख और जाड़ा से तबाह हो रहे हैं।
सुबुद्धि की हममें कमी है
हे मा! सुबुद्धि की हम आशा करते हैं।।

भूख और जाड़ा से तबाह है
रात-दिन आप की स्तुति करते हैं।
सुबुद्धि की हम आशा करते हैं
आप के चरणों में सिर नवा रहे हैं।।

आपको प्रशंसा (और) आप के ज्ञान की प्रशंसा
(हे मां !) अकथनीय है।
आप के चरणों में सिर नवाते हैं
हे मां ! हमारी करुण पुकार पूरा कीजिये।।

2. जदुर

भारत-वृन्दा बिर् रे बा आला जन
गुतु लेय हो बु गलङ् लेय;
नेहरू काका तबुए दुरङ् तन
अयुम् लेय ते बु तेल लेय।

इसु सुगड़ बाको आला कन
गुतु लेय होबु गलङ् लेय;
इसु सुगड़ काका दुरङ् तन
अयुम् लेय तेबु तेल लेय।

मोगो-मोगो बा को सोवन् तन
हुरुम्-सुकु, नीली को दोपलिन् तन;
इसु सुगड़ काका दुरङ् तन
एल 'चन्दर' संगी तेबु तेल लेय।

—बारुडीह, अप्रैल, 1959।

(हिन्दी)

भारत-वृन्दावन में फूल खिले हैं
हम लोग अब गूँथे, पिरोयें;
नेहरू चाचा हमारे गा रहे हैं
हम सुनकर गीत झोंकेंगे।

सुन्दर-सुन्दर फूल खिले हैं
हम लोग गूँथे-पिरोयें;
सुन्दर गीत चाचा गा रहे हैं
सुन कर हम गीत झोंकेंगे।

मह-मह फूल गमक रहे हैं
मधुमक्खी और भँवरे गूँज रहे हैं
बहुत सुन्दर गीत चाचा गा रहे हैं
आओ 'चन्दर' साथ सब झोंकेंगे।

3. जदुर
(मुण्डा)

सिउ: चलु तबु पुरना कमी
मुन्डा जगर तबु जोनोम् जगर
कबु अतुय तबु पुरन पोटोम्
जोतोन् केयतेबु जोगवे, नेय अञ: जगर।

इसु गोनोडन पूँजी तबु
टाका पैसाते किरिङ्कनमोग।
नेकन् पुँजी कबु अदेय तबु
जोतोन् केयते बु जोगवे, कनमोग।

(हिन्दी)

कृषि कार्य हमारा आदि पेशा है
मुण्डा बोली हमारी जन्म भाषा है;
पुरानी पूँजियो को नहीं बहायेंगे
मेरा कहना है, यत्न से रखेंगे।

ये बहुत ही मूल्यवान चीज हैं
रूपये पैसे से मोल नहीं मिलेंगी;
ऐसी पूँजियों को कहीं खो नहीं देंगे
यत्न से रखेंगे, नहीं मिलेंगी।

—बारुडीह, अप्रैल, 1959।

4. जदुर

दिशुम् समुन्दर दो जिलिमिलिय
दुकु-सुकु कोगे ओयरेन तन;
तल टुकु रे अञ् दोञ् केसेद्जन
अतोम् उड़डेञे बलय तन।

दुकु सुकु कोगे ओयरेन् तन
आञे मुली तेको हिजु: तन;
अञ: जिदो बोले अलय-बलय
कोत: कोरे जी तञ् ओटड् कन।

अपिर पेड़े: प्रभु ओमञमे
अतोम् दिशुमे तेञ् अपिर उड़डेन्
अम: जुड़ी कट रे चन्दर तिरु बकन
अतोम् दिशुम ते उड़डो: नगेन्

—बारुडीह, अप्रैल 1959।

(हिन्दी)

देश रुपी समुद्र झिल-मिला रहा है
(जिसमें) दुख और सुख ही तैर रहे हैं;
बीच के टीले पर मैं घिर गया हूँ
किनारा पाना मुझ से असम्भव हो गया है

दुख और सुख तैर रहे हैं
मेरी ओर ही आ रहे हैं;
मैं अत्यन्त ब्याकुल हूँ
मेरा जी कहाँ-कहाँ उड़ रहा है?

हे स्वामी! उड़ने की शक्ति दे दे
(ताकि) किनारे की दुनिया में उड़कर निकलूं
आप के युगल-चरण पर चन्द्र (कवि) सिर झुकाया है
किनारे की दुनिया में उड़ने के लिये (वर मांग रहा है)

5. जदुर

बुरु दोको जुन्डी केद पुतम्
ओको रेलङ् अतिङ असुलेन्
बन्दा दोको पोङे केद बुदुहाई
चिमय रेलङ् ओयरेन् असुलेन्।

अलङोलङ् सतीन पुतम्
ओकोरेलङ् अतिङ् असुलेन्
नेरे गेलङ् अतुन बुदुहाई
चिमय रेलङ् ओयरेन् असुलेन्।

रसिक दिशुम् उडर जन नेय
रेंगे: तेतङ् चिमिन् दुकुजला;
पुतम् लेका गेको सतीन् तन
हाईको लेका गेको अतुन् तन।

—बारुडीह, अप्रैल 1959।

(हिन्दी)

पहाड़ तो जला दिया गया हे पंडुक!
हम दोनो कहाँ अब चारा पानी ढूँढ़ेंगे?
बावली तो तोड़ दिया है बुदु मछली!
हम दोनों कहाँ तैर कर अब गुजर-बसर करेंगे?

हे पांडुक! हम दोनों भी इसी में सती हो जायें
हम दोनों कहाँ चारा-पानी ढूँढ़ेंगे?
इसी धारा में समा जायें हे बुदु
हम दोनों कहाँ गुजर-बसर करेंगे?

"रसिक" (कहता) है, यह शान्ति का देश अब गुजर गया
गरीबी ने भीषण ज्वालायें बुन दी हैं,
लोग पंडुक की तरह चारा-पानी के लिये मर रहे हैं
मछलियों की तरह धारा में बह रहे हैं।

6. बादुरङ्
(जदुर)

सराजोम् बादो अजिना, बाबु गिनादो अजिना।
सुड़ा संगेन् दो अजिना, डाली निराला।

बाबु गिनादो अजिना, बाउरय बरया अजिना।
डाली निरालादो अजिना, डाली तिञ्जरतोंजोर।।
उराय बराया अजिना, बा गुतु लेका में अजिना।
डाली तिञ्जर तोंजोर अजिना, डाली गलङ् लेम।।
मोदे सुतम् बरे सुतम् अजिना, बा गुतु लेका में।
मोदे चरि: बरे चरि: अजिना, डाली गलङ् लेकामे।।

—बारुडीह, अप्रैल, 1959।

(हिन्दी)

साल का फूल तो हे दादी बहुत सुन्दर हैं!
पल्लव तो हे दादी, पल्लव सुकोमल हैं!!

फूल बहुत सुन्दर है, गह-गहाकर खिले हैं।
पल्लव सुकोमल हैं, पल्लव झिलमिल कर रहे हैं।।

गह-गहा कर खिले हैं, फुल गूँथ लो हे दादी!
पल्लव झिलमिल कर रहे हैं, पल्लव पिरो लो।

एक सूत दो सूत तक, फल गूँथ लो।
एक कड़ी-दो-कड़ी तक, पल्लव पिरो लो।।

7. जदुर

अपे दो दिकु सिपई को
अञे दो सीउ: चलु होड़ो
अलोरेपे दिकु दिकुञ
दिकु कजी कञे इतुवान्

—बारुडीह, अप्रैल, 1959।

(हिन्दी)

तुम सब दिकुओं के सिपाही हो
मैं तो किसान आदमी हूँ,
तुम लोग मुझको दिक मत करो
मैं दिक-दिक करना नहीं जानता हूँ।

8. जदुर

बिरेते सेन्देरा होञ् सेने केन
पोटो: जनुमतेञ् जनुम् जन;
कटा चन्डाङे होञ् बलय जन
ओड़: रूवड़ राटीञ बलयजन।

तिकिन् सिंगी सोमय तै केन
गोट बिरे राटी सि: सोड़ोए जन;
अलय-बलय बोले जेटे तन
चुपद् जप: रेहोञ् हेपादेन् जन।

होरा अतोम् उली अम्बरय रे
तोवउ अरकुदे होकिञ जगर तन;
दुकु-सुकु सोबेन् जमा रेगे
बिधि देरङे होए ओल तद।

—बरुडीह, अप्रैल, 1959।

(हिन्दी)

शिकार करने में जंगल गया था।
पोटो: काँटा मेरे पैर में गड़ गया;
पैर आगे बढ़ाना मुश्किल हो गया
घर लौटना भी असम्भव हो गया।

दो पहर का समय था —
सारा वन सुनसान था;
व्याकुल कर देनेवाली धूप थी
छोटी सी झाड़ी में मैंने शरण ली।

रास्ते के किनारे की अम्बराई में
कोयल और कटफोड़वा बात कर रही थीं
दु:ख-सुख सब एक (में) है
विधाता ने ही ऐसा लिख दिया है।

9. जदुर

सिऊ: चलु बुगिन चि नोकरी-चाकरी नपय
सिऊ: चलु कोदो हो को सिकिद् सिकिद्।
सिऊ: चलु बुगिन चि नोकरी-चाकरी नपय
नोकरी-चाकरी कोदो होको चाली-बाली।।

सिऊ: चलु कोदो होको सिकिद्-सिकिद्
निद-सिंगी ते को कामी तन।
नोकरी-चाकरी कोदो होको चाली बाली
दुबे-दुबे तेको जो में तन।।

—बारुडीह, अप्रैल, 1959।

(हिन्दी)

जोतने कोड़ने का काम अच्छा है कि नौकर-चाकर रहना
किसान लोग तो हमेशा काम करने में परेशान हैं।
जोतना-कोड़ना अच्छा है कि नौकर-चाकर रहना
नौकरी-चाकरी करने वाले तो चहल-पहल दिखाई पड़ते हैं।

किसान लोग तो काम करने में परेशान हैं
वे रात-दिन खट कर काम करते हैं।
नौकरी-चाकरी करने वाले चहल-पहल दिखाई पड़ते हैं
और, बैठ-बैठ कर आराम से रहते खाते हैं।

10. जदुर

तिकिन् सिंगी बुरूञ् रकब् लेन
बारू उम्बलेरेञ् उम्बुल केन;
बारू उम्बलेरेञ् दुरङ् केन
पिजोड़ी: चेणे दुरङ् दुनुवण केन
पिजौड़ी:चेणे दुरङ् दुनुवण केन।

पिजोड़ी:चेणे दुरङ् दुनुवण केन
तो वउ चेणे मुरली ओरोङ् केन;
तारा बड़े दारू दाड़ा रे
कुदे चेणे डुल्की केन।

डिन्डा सोमय चली बली सोमय
पम्पालद् लेक जलातिङ् सोमय
बुरू टिकुरारे दुरङ् बेड़ मो नेय
दारू डम्बुले कोरे रसिक जगर मोनेय।

—दुगदा बुरू, अप्रैल, 1959।

(हिन्दी)

दोपहर को मैं पहाड़ चढ़ा था
और कुसुम की छाया में बैठा था;
कुसुम की छाया में मैंने गाया
जिसको पिजोड़ी: चिड़िया ने दुहराया।

पिजोड़ी: चिड़िया ने इसको दुहराया
कोयल ने मुरली छेड़ी
वट वृक्ष की एक डाल पर
कटफोड़वा ने ढोलक पर ताल ठोकी।

कुवाँरी का समय चहल-पहल का समय
तितली-सा उड़ने-फिरने का समय;
मुझको मन करे पहाड़ों पर गाता फिरना
रसिक जी को मन करे, गाछों की छाया में
संगिनियों से वार्तालाप करना।

11. कुइली

(जदुर)

दुगदा बुरू तेहोञ् रकब लेन
आलाकन् सराजोम् बाञ् लेले लेद;
बाड़े उम्बुलेरेञ् दुबे केन
कुइलिय: कुहू बोलेञ् अयुम् लेद।

आला कन सराजोम् बाञ लेलेलेद
मोगो-मोगो बुगिन बा सोवन तन,
कुइलिय: कुहू बोलेञ् अयुम् लेद
कुइलिया कुहू तंदोञ् रसिकाजन।

मोगो-मोगो बुगिन् बा सोवन तन
हुरूम् सुकु बा चेपे: तन,
कुइलिय: कुहू तेदोञ् रसिक जन
प्रैईली बुले गेहोञ् बुले जन।

—दुगदाबुरू, अप्रैल, 1959।

(हिन्दी)

दूगदा पहाड़ मैं चढ़ा
खिले हुए साँखू के फूलों को मैंने देखा,
वरगद की छाया में बैठा
कोयल की कुहुक मैंने सुनी।

खिले हुए शाल के फूल देखे
महमह सुन्दर गन्ध दे रहे थे,
कोयल की कूक मैंने सुनी
कुहू की रट मुझे बहुत प्रिय लगी।

मह-मह को गंध धुली हुई है (हवा में)
मधुमक्खियाँ रस चूस रही हैं,
कुहू की रट मुझे अच्छी लगी
मैं उस तान पर मतवाला हो गया।

12. जदुर

पुन्डी सयोबे को सेनो: जन
दिसुम् अबुअ: दो रड़ जन,
दिसुम् तबु अबुअ: जन
सँगी-पति तेबु सबे रूड़य।

दिसुम् तल रे हुड़िङ् मरङ्
होने-गण तेबु पेरेय: कद,
कबु एपेरङ्ग सुगड़ हग को
मियद् गन्डुरेबु दुब जगर।

मियद् गन्डु रेबु दुबे जगर
पुरना दुमङेबु जुगुतुय,
निली लेक गेबु जमन
हुरूम् सुकु लेकबु दुरङेय।

—बारूडीह, मार्च, 1959।

(हिन्दी)

उजले (चमड़े वाले) साहेब चले गये
हमारा देश अब आजाद हुआ,
गुलामी अब दूर हो गई
सब मिल कर फिर से देश सम्भालें।

देश में छोटे-बड़े सब हैं
(भारत मां के) बाल-बच्चे ही हैं,
लड़ाई झगड़े नहीं करेंगे भाई
एक पीढ़े पर आओ बैठ कर बात करेंगे।

एक पीढ़े पर बैठ कर बात करेंगे
पुराने माँदरों की मरम्मत करेंगे,
भँवरे की तरह संगठित हो जायँ
मधुमक्खियों की तरह मधुर गीत गायेंगे।

13. जदुर

सालू सुगा, सालू मैनो रे
मैनो दोको आटा कियःरे;
सालू सुगा, सालू मैनो रे
सुगा दो को जुड़ः कियःरे!

मैनो दोको आटा कियःरे
चेतन् टोला हेसः जरोम् रे;
सुगा-दोको जुड़ः कियःरे
लतर् टोला बड़े गद्र रे।

हियतिङगे मोनिङरे
ओकोय देरङ आटा कियःरे
चकातिङ गे सनञ रे
चिमय देरङ जुड़ः कियःरे।

—बारूडीह, जनवरी, 1959।

(हिन्दी)

सालू सुग्गा और सालू मैना!
मैना मेरा फँसा लिया गया!
सालू सुग्गा और सालू मैना
मेरा सुग्गा बझा लिया गया!

मेरा मैना फँसा लिया गया
ऊपर टोले के पके पीपल पर;
मेरा सुग्गा बझा लिया गया
नीचे टोले के गदराये बरगद पर

चिन्ता करने की इच्छा होती
जाने किसने फँसा लिया!
पश्चाताप करने का मन करता
जाने किसने बझा लिया।

14. जदुर

बिरेतेञ् सेने केन दारु कोञ् लेलद्
गोसो तन, मैला तन सोबेन दारू;
कुड़म् बितारेरे जी लिपिर केन
अञः जी वो बोले गोसो जन।

हुड़िङ दिने सिदञ् सेने केन
हेन्दे हरियरेञ् लेले-लेदः
चेड़े चिपरूब् को गोले-दुरङ
अञः जीवो बोले आला लेन।

सिरमा जेटे अर लोलो होयोते
पुराना पान्डु सकम् ऊरूडु तन;
ओते रे हुड़िङ मरङ सोबेन् दारू
रोवोड़ो डुटु लेक लेलो:तन

—बारुडीह, दिसम्बर, 1958।

(हिन्दी)

मैं जंगल गया था, गाछों को देखा
सभी मुरझा रहे थे, मैला हो रहे थे;
छाती में हृदय धड़कने लगा
मेरा मन भी मुरझा ही गया!

कुछ दिन पहले गया था
हरियाली छायी हुई थी;
पक्षी चहक रहे थे
मेरा मन भी खिला हुआ था।

गर्मी और लू से
पुराने पीले पत्ते झड़ रहे हैं;
धरती के छोटे-बड़े सब पेड़
सूखे तरू से ठूंठ लगते हैं।

15. जदुर

नेओते दिशुम तल रे
हटी किसिम् बा मेन ग;
हे गतिङ्ग सोना मुनीरे!
ओको बारे जिगे सुकुम।

जुही, चमेली इच: अटल बा;
कुटी, कोदोम् हरि तोवा बा;
हे गतिङ्गसोना मुनी रे!
ओको बारे जिगे सुकुम।

तिसिङ्ग दोम् चिक जन
पेटेः पतड़ सकम् लेकम् गोसो जन;
हे गतिङ सोना मुनीरे!
जेतन् बारे अमः सुकु बनोग।

—बारूडीह, अगस्त, 1958।

(हिन्दी)

इस धरती के बीच में
किस्म-किस्म के फूल हैं।
हे प्रिये सोना मुनी!
किस फूल में तुम्हारा मन है?

जूही और चमेली, धवई और अटल फूल
कुटी और कदम, हरि और तोवा फूल;
हे प्रिये सोना मुनी!
इनमें किस फूल में तुम्हारा मन है?

आज तो तुम क्या हो गई?
तोड़ी हुई पत्ती-सी मुरझा रही हो;
हे प्रिये सोना-मुनी!
किसी फूल में तुम्हारा मन नहीं है।

16. जदुर

एलरे बारू सूड़ गतिङ्ग!
कचिरेम् हियतिङा;
एलरे कुद सूड़ सगञ्
कचिरेन् चकातिङा।

संगिन् दिशुम् रेम् पन्डिल् जन
कचिरेम् हिय तिङा;
जिलिङ गमय रेम् चोलङ जन
कचिरेम् चका तिङा।

हियतिङ रेयो गतिङ रे
कारे हिजुग रे सिद लेकन् सोमय;
चकातिङ रेयो संगञ् रे
कारे रूवड़: सिद् लेकन् नुसड़।

कारे हिजुगरे सिद् लेकन् सोमय;
मोस गे गतिङेरे डिन्डा सोमय।
कारे रुवड़:रे सिद लेकन नुसड़।
मोसगे सगञ् रे डँगुव नुसड़

—बारूडीह, अगस्त, 1958।

(हिन्दी)

हे कुसुम कोंपल प्रिये!
क्या तुमको कोई चिन्ता नहीं है?
हे जामुन कोंपल प्रिये
क्या तुमको कोई अफसोस नहीं है?

दूर देश में तुम फेका गई
क्या कोई चिन्ता नहीं है?
दूर देश में छितरा गई
क्या कोई अफसोस नहीं है?

चिन्ता करोगी तो भी प्रिये!
पहले का समय तो अब नहीं आयेगा;
फिक्र करोगी तो भी प्रिये!
पहले की अवस्था नहीं आयेगी।

प्रिये! पहले का समय नहीं आयेगा
एक ही बार कुवाँरापन!
पहले की अवस्था नहीं लौटेगी
एक ही बार अविवाहितावस्था।

17. जदुर

सोबेन् मुली लेले लेरे
लेलोग पिड़ी पदिल;
मिदे सोमय तैकेन—
बिरेते ओते दलोब् लेन।

बिरेते ओते दलोब् लेन
सिंगी राटी हो निद लेन;
ओते रे मानव होन
सिंगी मरेसल् को दण केन।

हियतिङगे मोनिञ
नेकन् बिर उजड़ जन;
चकातिङ्ग गे सनञ
बिर जातिगे डुबव तन।

—बारूडीह, सितम्बर, 1958।

(हिन्दी)

सब करफ देखने से
टांड़ ही टांड़ दिखाई देता;
एक समय था
जंगल से धरती ढकी थी।

जंगल से धरती ढंकी थी
दिन तक रात रहती थी;
धरती पर लोग
सूर्य की रोशनी खोजते फिरते थे।

पश्चात्ताप करने का मन करता
ऐसे जंगल उजड़ गये;
अफसोस करने का मन करता
जंगल का नाम ही डूब रहा है।

18. जदुर

तल होरा रेबु नपम् जन
दुकु सुकु दोबु कुपुलि जन;
अपेय: हतु तबु ओको दिशुम
इसु सँगिन तेञ् हिजु:तन।

मरङ गड़ होले परोम् तद
बुरू, गुटू टिकुराले रकब तद;
जोजो पिड़ि होले सेन् परोम् तद
इसु सँगिन तेले हिजु: तन।

(हिन्दी)

बीच रास्ते में मुलाकात हो गई
दुख और सुख के विषय में तो पूछताछ हुई:
आप लोगों का ग्राम-देश कहाँ है?
मैं तो बहुत दूर से आ रहा हूँ।

बड़ी नदी पार कर हमलोग आये हैं
उपवन होते हुए पहाड़ पार किये
ईमली टांड़ पार करते हुए आये
हमलोग बहुत दूर से आ रहे हैं।

19. जदुर

बारू सुड़ा दो जेंगेद्-जेंगेद्
अञ् दो होञ् तुंगुर-मुंगुरा;
जुम्बड़ बितररे चेणे को चेरेबेरेय,
जी बितररे तञ् जी अकल् बकला।

नेकन् सोमय रे हगम् उकुन् जन
निदा सिंगी जी तञ् सेरे तन;
दिसुम् होड़ो को लन्द-जगर तन
हिजु:सेनो:तन को गोले दुरङ तन।

बा लेकन् सोमय रेम् उकुन जन
बालेकगे हो आला कनोः मे
ने लेपेल दिसुम तेम् दनङःजन
भोगोमन् कोयों रेः इनुङःबेड़ा मे।

—बारूडीह, मार्च, 1960।

(हिन्दी)

कुसुम के पोंपलों की लालिमा देख कर
मैं बेसुध हो जाता हूँ।
झुरमुट में चिड़ियां चहकने लगती हैं
मन में व्याकुलता छा जाती है

ऐसे समय में हे भाई! तुम छोड़ गए।
रात दिन मेरा जी गल रहा है।
दुनिया के लोग हँस-बोल रहे हैं
आते जाते हैं, सिसकारते गाते हैं

फूल जैसे समय में छिप गये
सारा देश अंधकार हो गया
छिप गये कि किसी ने छिपा लिया
पर भगवान तुमको गोद में खेलाता रहे।

20. जदुर

हियातिङ रेयो मइनम् चका तिङ् रेयो
बा गुतु कोदो ओड़ोः कम् नमे गेय।
हियातिङ् रेयो मइनम् चका तिङ् रेयो
पम्पा लद् लेक ओड़ोः कम् जला तिङ् गेय।।

बा गुतु कोदो ओड़ोः अलोम हियतिङ।
ओड़ाःजना गोमे, दुवर जन।
पम्पा लद् लेका ओड़ोः अलोम् चकातिङ।
चन्टु जना गोमे लुन्डिः जन।

—बारूडीह, दिसमबर, 1959।

(हिन्दी)

चिन्ता करोगी, पछताओगी; तो भी
फिर फूल गूंथ नहीं पाओगी।
चिन्ता करोगी, पछताओगी
तो भी तितली की भाँति फिर नहीं उड़ पायोगी।
फिर फूल गूँथ नहीं पाओगी
क्योंकि तुम घर हो गई, द्वार हो गई (शादी हो गई)
तितली की भाँति फिर नहीं उड़ पाओगी
क्योंकि, घड़ा और लाकुर बन गई (मालकिन बन गई)

21. जदुर

जरपी सुसुन् दो दइना सुसुन् सेनोः तन।
जदुर सुसुन् दो दइना सुसुन् हिजुः तन।।
मागे मन्डी जोम् केयते जरगा सेनोः तन।
बा मन्डी जोजोम् नगेन् जदुर हिजुः तन।।
जरगा सुसुन् दो दइना, हम्बुदे सनञ्।
जदुर सुसुन दो दइना गुंगू देगेमोनिञ।।

बारूडीह—दिसम्बर, 1959।

(हिन्दी)

जरपी नाच तो दीदी नाच अब चला जा रहा है!
जदुर नाच तो दीदी! अब आ रहा है!!
मागे पर्व का भात खाकर अब जरगा नाच जा रहा है।
सरहुल भात खाने के लिए ही अब जदुर नाच आ रहा है।।
जरगा नाच तो दीदी! आलिंगन किये रहने का मन करता है।
जदुर नाच तो दीदी! छाती में दबाये रहने का दिल करता है।।

22. अम् होनङ्!

बरँगु बा रेदो होनङ चम्पा बा रेदो
सोवन् तेगे अमेञ् अगम मेया;
इच: बा रेदो होनङ् मुरुद् बा रेदो
सँगिन ते अमेञ् दुरूम् मेया।

सोवन तेगे अमेञ् अगम् मेरे
सेने होरा कोरेञ् दारोम् मेतेय
सँगिनते अमेञ् दुरूम् मेरे
रँगा गमेछाञ् ओट डेय।

—बारूडीह, मार्च, 1960।

यदि तुम

यदि तुम बबुल या चम्पा फूल होती तो
मैं गंध से ही तुमको पहचान लेता।
यदि तुम धबई या टीसू फूल ही होती तो
दूर से ही मैं तुमको पहचान लेता।

गंध से ही मैं तुम को पहचान लेता
तो मैं रास्ते में ही तुमसे मुलाकात करता।
दूर से ही मैं तुमको पहचान लेता तो
मैं भी रंगीन गमछा उड़ाकर तुमको सचेत करता।

23. दुकु तन हग लतिन

(जदुर)

असम् सँगिन् दिसुम्
मदे तेदो हग कञ् लेले मेय;
दुकु रेमा चिहो सुकुरेका
लुतुर तेदो हग कञ् अयुम्मेय।

मेदे तेदो हग कञ् लेलेमेय
लिका तेगे हगञ् लेलेमेय;
लुतुर तेदो हग कञ् अयुम्मेय
कजि चल कजि तेगेञ् अयुम्मेय।

लिका तेगे हगञ् लेलेमेय
ओड़ो: दोज: कञ् लेलेमय;
कजि चल कजि तेगेञ् अयुम्मेय
गोटा दिसुम हग कोवाँसी लेलेय।

—बारूडीह, जनवरी, 1960।

(हिन्दी)

आसाम के दुखी भाई के प्रति

आसाम जैसे दूर देश
हे भाई! मैं तुमको नहीं देखता हूँ;
दु:ख में हो या सुख में हो
कानो से तुम्हारी बात नहीं सुनता हूँ।

आँखों से तुमको नहीं देखता हूँ
चिट्ठियों में ही तुमको देखा करता हूँ;
कान से तो नहीं सुनता हूँ
लोगों से ही तुम्हारी बात सुनता हूँ।

चिट्ठी पत्रों में ही तुमको देखता हूँ
लगता है फिर तुमको नहीं देख सकूँगा;
लोगों से ही तुम्हारी बात सुनता हूँ
हे भाई! समूचा देश अंधकार सा लगता है।

24. जदुर

दुगदा बुरू गेलिङ् रकब् जन
उलि मुलि गेलिङ् मुलिन् जन;
उलि उम्बूल् रेलिङ् दुबे जन
हटि कुटि गेलिङ् जगर जन।

दोव कन् रूतु तीरेञ् सबे केद
मिस रूतु जीतेञ् ओरोङ् केद;
बेड़ा रे धँगिड़िको तिंगुन् जन
तिंगु-तिंगु गेको लेपेल् जन।

ओरोङ् मेना गेहोञ् ओरोङ् लेद
ओरोङ् केद: गेहोञ् गुना केद;
कने-कने इसुको हेत केद् लिङ।
पयला किचिरिको दोन्दोवद् लिङ्।

—बारूडीह, मार्च, 1962।

(हिन्दी)

दुगदा पहाड़ पर हमदोनों चढ़ें
और आम की ओर ही बढ़ें;
आम की छाँह में ही बैठें
किस्म-किस्म की बातें करते रहें।

रखी हुई वांसुरी को मैंने लिया
दिल से एक बार मैंने बजाया;
तराई में युवतियाँ खड़ी हो गई
खड़ी-खड़ी एकटक ताकती रही।

मुझे तो बजाना था, अतः बजायाः
लेकिन बजाया यही दोष किया
बार-बार हमदोनों को ताकती रहीं
और आँचल उठा उठा लहराने लगीं।

25. तंगि

(जदुर)

सपड़तिङ होर रे गतिं
चिमिन् होञ् तिंगु तँगिय;
जौ जदुर अकड़ा रे गतिं
चिमिन् हो दुमङ सड़िय।

चिमिन होञ् तिंगु तँगिय
जेतारेयो कमे ले लोग;
चिमिन् हो दुमङ सड़िय
धँगिड़ि को ककी उरुङोग।

जेता रेयो कमे ले लोग
चियः होम् हिड़ि किदिङ
धँगिड़ि को ककी उड़ङोः
चिलक तेबु जदुर सुसुन।

—राँची, जनवरी, 1961।

(हिन्दी)

प्रतीक्षा

चौराहे पर प्रिये कबतक प्रतीक्षा करूँगा!
नित्य जदुर के अखाड़े में, कबतक मांदर बजता रहेगा?

कबतक प्रतीक्षा करूँगा, कहीं भी दिखाई नहीं पड़ती।
कबतक मांदर बजता रहेगा, युवतियाँ निकलती ही नहीं।।

कहीं तुम दिखाई नहीं पड़ती, क्यों भुला दिया तुमने?
युवतियाँ नहीं निकलती, जदुर नाच कैसे होगा?

26. चिमिन् सन्ते!

(जदुर)

दा:सोम् सड़ागीरे अयरा
चिमिने होम् बिजिर् बिजिरेन्!
गुले-गुले इकिररे किकिर्
चिमिने होम् सुइलेन् डबुरनेन्!

चिमिने होम् बिजिर बिजिरेन्
जलोम् होड़ोको गअ: तन;
चिमिने होम् सुइलेन् उबुरनेन्
अटा होड़ोको लासा तन।

जलोम् होड़ोको गअ: तन
मुसिङ: दिने दोको जलोम् मेगे!
आटा होड़ो को लासा तन
मुसिङ: दिने दोको आटा मेगे!

—राँची, फरकवरी, 1961।

(हिन्दी)

कबतक?

दा:सोम के झरने में हे अयरा!
कबतक चमचमाती रहोगी?
गहरे नीले जल में हे किकिर!
कबतक डुबकियाँ लगाती रहोगी?

लोग जाल बुन रहे हैं
शायद एक दिन तुमको फँसा लेंगे;
लोग लासा तैयार कर रहे हैं
शायद एक दिन तुमको बझा लेंगे।

27. जीरे

(जदुर)

मणि-मणि ते उडु: जीरे बोलो तन
नेते पिरिल्-पिरिल् मेद्द: मेद्ते जोरो तन;
मुसिङ दिने दो डिन्डा सोमय बगिङ गेय
चली बाली, सुसुन-करम्, मणि-मणि: ने एणे: तन गेय।

(हिन्दी)

क्षण-क्षण मन में चिन्ता प्रवेश कर रही है
इधर अविरल आँसू आँखों से झर रहे हैं
(क्यों? इसलिये कि)

एक दिन तो जवानी छोड़ देगी
चहल-पहल, रास बिहार मन से
क्षण-क्षण बुझते जा रहे हैं।

कबतक चमचमाती रहोगी
लोग जाल बुन रहे हैं;
कबतक डुबकियाँ लगाती रहोगी
लोग लासा तैयार कर रहे हैं।

28. अम्

(जदुर)

इचः बा तेमा चिगो मुरूद् बा तेमा
बुरू जोला कोरेम् जेंगेद् जेंगेद्
तोवा बा तेमा चिगो अटल बा तेमा
हटिया-हटियातेम् तरल-तरल।

बुरू जोला कोरेम् जेंगेद्-जेंगेद्
हुरूम् सुकु कोचिम् चरा तन;
हटिया-हटिया तेम् तरल्-तरल्
नीली, उरू कोचिम् बुलव तन।

डिन्डा सोमय बारी चली बली
जुड़िन् जन्ते दिसुम् तोले मेया;
कड़ासी रसी मिस पारिड़ि तम्
बसी रसी कड़ासी मेया।

—बारूडीह, मार्च, 1960।

(हिन्दी)

धवई फूल हो कि टीसू फूल हो,
तराइयों में लालिमा बिखेर दी हो?
तोवा फूल हो कि अटल फूल हो,
रास्ते में उज्जवलता बिखेर दी हो?

तराइयों में लालिमा बिखेर दी हो,
क्या मधुमक्खियों को लुभा रही हो?
रास्ते में सफेदी बिखेर दी हो,
क्या भँवरों को फंसा रही हो?

कुवाँरी में ही चहल-कदमी कर लो
जोड़ी होने के बाद तो दुनियाँ तुम्हें बाँध लेगी।
इसलिये, रस कलश एक बार छलका दो
पीछे, वासी रस कलश बन जाओगी।

29. बादुरङ

(जदुर)

सोना लेकन् सराजोम् बाए हिजु: लेन
सोना लेक गेबु जोगव कि:य;
रूपा लेकन् सुड़ संगेने: सेटेर लेन
रूपा लेक गेबु जोतोन् कि:य।

सोना लेक गेबु जोगव कि:य।
मेन्दो तिसिङे दोए बगे जद् बुव;
रूपा लेक गेबु जोतोन् लि:य
मेन्दो तिसिङे दोए रड़ जद् बुव।

—बारूडीह, अप्रैल, 1959।

(हिन्दी)

सुनहला सरहुल पर्व आया
हम सोने के समान ही जुगाकर रखें;
चाँदी सा नव पल्लव आया
चाँदी के समान ही यत्न से रखें।

सोने समान ही जुगाकर रखें
पर, आज तो हम सबों की छोड़ रहा है;
चाँदी के समान ही यत्न से रखें
पर, आज तो छोड़ रहा है।

30. जदुर

इच: बा बा पिड़िद्-पिड़िद्
जोलारे: गोले तन
अटल बा बा तरल्-तरल्
कुन्डम् रे: हेपद् कन

जोला रे: गोले तन
अटल बा: मेद्द: जोरो तन;
ने हुड़िङ बकड़ि रे
जेतारेयो सुकु बनोग!

—बारूडीह, अगस्त, 1958।

(हिन्दी)

चम-चम चमकता हुआ इच: फूल
तराई में सिसकारी बजा रहा है।
उजले-उजले अटल फूल
घर के पिछवाड़े में सिसक रहा है!!

तराई में सिसकारी बजा रहा है
अटल फूल के आँसू झर रहे हैं
इस छोटी-सी वाटिका में
कहीं बी स्वछन्द सुख नहीं है।

31. जदुर

कुरी: हो कुद सुड़ गतिङ दो
कुरी: हो कए लेलो: लेलो:।
कुरी: हो बरू सुङ संगञेदो
कुरी: हो कए चिन:ओ-चिन:ओ।

कुरी: हो कए लेलो: लेलो:
कुरी: हो चन्डु: तुर जन
कुरी: हो कए चिन:ओ-चिन:ओ
कुरी हो? इपिल हसुर जन।

सड़ी दो सड़ी तन दुमङ गड़ परोम् टोला रे
एन् रे चि गतिङे रेम् सुसुन् तन।
रूम्वुल् दो रूम्बुल् तन रूतु टुँगरी परोम् रे
एन रे चि संगञेरेम् करम तन।।

एल रे चि गतिङ रे हिजुः को: मे
ने टुनुडु सोमय रेलङ जगर् कोवः!
एल रे संगञ रे सेटेर् को: मे
ने टुनुडु-सोमय रेलङ लपन्द कोवः!

—बारूडीह, अगस्त, 1958।

(हिन्दी)

कहाँ मेरा जामुन कोपलवत् प्रिय?
कहाँ, कहीं नहीं दिखलाई पड़ता!
कहाँ मेरा कुसुम कोपलवत् प्रियतम?
कहाँ, कहीं नजर में नहीं आता!

कहीं नहीं दिखलाई पड़ता है
कहाँ है? चाँद उदय हो गया!
कहीं नहीं नजर में आता है
कहाँ है? संकेत का तारा भी डूब गया!

बज तो बज रहा है, मांदर, नदी के पार के टोले में
हे प्रिय! क्या वहीं नाच रहे हो?
वाँसुरी की तान तो गूंज रही है उस टोंगरी के पार में
हे प्रियतम! क्या वहीं करम नाच रहे हो?

हे प्रिय! आओ तो,
इस अन्तिम क्षण में हमदोनों बात कर लेंगे!
हे प्रियतम प्रगट हो जाओ तो,
इस आखिरी समय में हँस बोल लेंगे!

32. दिशुम रे

(जदुर)

हिसिंग चेंट, मौरा विषी
हिसिंग दो सल कन मरङ जाला।
हिसिंग चेंट, मौरा विषी,
मौरा दो पितिय कन मरङ काला,

हिसिंग दो सल कन मरङ जाला,
हग हग ककी उपरुम् तन।
मौरा दो पितिय कन मरङ काला,
हग जतीरेको जुदन् तन।।

हग हग ककी उपरुम् तन
हग हग रेको सोपोद् तन।
हग जतीरेको जुदन् तन
सयमेद् कोसे मेद् को लेपेल् तन।।

हग हग रेको सोपोद तन
हग: मयोमेको जेम्बेद् जद।
सय मेद्-कोसे मेद् को लेपेल् तन
हग प्रेमे दो को आदे जद।।

—बारूडीह, मई, 1959।

(हिन्दी)

देश में

ईर्ष्या-द्वेष और विष-जहर—,
ईर्ष्या-द्वेष चुना हुआ है महा अन्धा।
ईर्ष्या-द्वेष और विष-जहर—,
विष-जहर तो लक्षित है महा मृत्यु!

ईर्ष्या तो चुना हुआ है महा अन्धा,
भाई-भाई को नहीं पहचानता।
विष तो लक्षित है महा मृत्यु,
भाई-भाई से जुदा हो रहा है।।

भाई-भाई को नहीं पहचानता,
भाई-भाई में लड़ रहे हैं।
भाई-भाई से जुदा हो रहा है,
भाइयों को बुरी दृष्टि से देख रहा है।।

भाई-भाई में लड़ रहे हैं,
भाई-भाई का खून चूस रहे हैं।
भाइयों को बुरी दृष्टि से देख रहा है,
भातृ-प्रेम तो खो रहे हैं।

33. ओर जदुर

फागुन चन्डुः मुलुः जन, सेन्देरा को केड़ा केद।
बा चन्डुः मुलुः जन, बा दो को नेन्डा केद।।

सेन्देरा को केड़ा केद, सार तेको सिंगारा कन।
बा दोको नेन्डा केद, बागे को दारोम् तन।।

सार तेको सिंगरा कन, बिर रेको बोलो जन।
बागे को दारोम तन, इलि मन्डि को जुगुतु तन।।

बिर रेको बोलो जन, बिर बुरु एकेल तन।
इलि मन्डि को जुगुत तन, सोबेन् को कौ बौ तन।।

—बारूडीह, जून, 1960।

(हिन्दी)

फागुन का चाँद निकल आया
शिकार के लिए डंका बजा;
सरहुल का चाँद उदय हुआ
सरहुल पर्व मनाने का दिन निश्चित हुआ।

शिकार के लिए बुलाहट आने लगी
लोग तीर-धनुष से सज गये हैं;
सरहुल पर्व मनाने का दिन निश्चित हुआ
सरहुल पर्व का स्वागत करने लगे (सब)

तीरों से सज गये
जंगलों में प्रवेश कर गये;
सरहुल के स्वागत में
हड़ियाँ और भोजन का प्रबंध करने लगे।

जंगलों में प्रवेश कर गये
वन-पर्वत दहला उठे
हड़ियाँ और भोजन का प्रबंध करने लगे
सभी चहल-पहल में पागल हैं।

34. ओर जदुर

ओचोरेपे तेगया दुति तञ्
ओचोरेपे तृण साया साड़ी।

मिल-मिल मील दुति तञ्
रिग-मिग किरिङ साड़ी।

सुसुन् कोरेञ दुतिय दुतितञ
करम् कोरेञ सड़िय साड़ी!

—राँची, जनवरी, 1961

(हिन्दी)

देखो, मेरी धोती है, पैर से मत रौंदना!
देखो, मेरी साड़ी है, पैर से मत दबाना!

मल मल मिल धोती है मेरी
झिलमिल झिलमिल खरीदी हुई साड़ी है।

नाचने ले जाऊँगा धोती
करम नाचने ले जाऊँगी साड़ी।

35. ओर जादुर

साधु लेक लोका पोति
हुतु हतुए होनोर तन;
कबु कजि जेतन:
सीता सोति: दण तन।

ठोरेपे सोबेन् हग को
बेदा बुवए सरम् ते;

कबु बेदन् गे, कारे
सीताए इदि लोंका ते!

एला हग आदिवासी को
चिरगलाकन् बु तैना;

सीता लेकन् जोनोम् दिसोम्
धोरोम् कोरोम् कबु नशवैय।

—बारूडीह, मार्च, 1960।

(हिन्दी)

साधू के भेष में लंकापति
गाँव-गाँव चक्कर काट रहा है;
हमलोग कुछ भी नहीं बोलेंगे
सती सीता की खोज में है।

ख्याल कीजिए सभी भाइयों?
हिरण से लुभा देगा
लेकिन भूल में नहीं आयें; नहीं तो,
सती सीता को लंका ले जायेगा!

हे आदिवासी भाइयो!
हमलोग सचेत रहेंगे।
सीता के समान जन्म-भूमि,
धर्म और कर्म हैं,
इन्हें नाश नहीं करेंगे।

36. गेना

गड़ को जोबेलारे गतिङ्
अमेचि दुरङ् लेद?
बुरु चेतन् उली सुबरे संगञ्
अमेचि ओरोङ् लेद?
अञे गेञ दुरङ् लेद गतिङ्
अड़: सिदेऽञ् हिजु: लेन;
अञे गेञ ओरोङ् लेद संगञ्
चेणे अटञ् पयर लेन।
अमग: दुरङ् दो गतिङ्
रेङ् को रागे लेका गे;
अमग: रुतुरुम्बुल् संगञ्
जी रे दो गुतुय लेकागे।

—दुगदाबुरु, अप्रैल, 1959।

(हिन्दी)

नदी के दलदल में हे प्रिय!
क्या तुमने ही गीत गाया था?
पहाड़ पर आमके नीचे प्रिय!
क्या तुमने ही बाँसुरी बजायी-थी

हाँ प्रिय! मैंने ही गाया था
साग तोड़ने (वहाँ) आयी थी;
हाँ प्रिय! मैंने ही बाँसुरी बजायी थी
चिड़ियाँ फँसाने आया था?
तुम्हारे गीत प्रिये!
झींगुरों की झंकार-से हैं;
तुम्हारी बाँसुरी-तान प्रिय!
दिल में चुभती-सी लगती हैं।

37. गेना

कबु एपेरङ् कबु एपे सेद
ने कलोम् बा बनोग;
सरजोम् बागे बिर् रे बनोग
समा लुतुर्गे समा सुपिद्गे!
हरे हग को कबु एपेरङ
हरे मिसी को कबु एपेसेद;
सरजोम् बागे बिर्रे बनोग
समा लुतुर्गे, समा सुपिद्गे।
—बारूडीह, मार्च, 1962।

(हिन्दी)

झगड़ा नहीं करें, नाराज न होवें
इस साल फूल नहीं हैं
शाल के फूल ही वन में नहीं हैं
फूल रहित कान और फूल रहित जूड़े ही रहे!
हे भाइयो! झगड़ा नहीं करें
हे बहनो! नाराज नहीं होवें
शाले के फूल ही वन में नहीं हैं;
फूल रहित कान और फूल रहित जुड़े ही रहे!

38. इपिल् गेना

जिलि मिलि तन् ने इपिल्
लन्दा तन लेकः को सोबेन्;
मरति लेल् लेकोम् गतिङ्
चिमिन् सुगड़ः को सोबेन्!
इदो बंको रेदो इपिल्
सिःसङ् गेजः गतिङ्;
दुपुलड़ बरिया सुड़किञाः
सुगड़वो कागेजः गतिङ्।
इपिल हारे पोरसोद्देंग
जमन् रेयः चिन इपिल्;
निकु दिशुम् रेन पपरि सोंगे
टुवर कोवः गोमके गतिङ्।

—बारूडीह, दिसम्बर, 1959।

(हिन्दी)

तारे

झिलमिल करते थे तारे
हँसते से भाते सारे;
जरा आँख खोलो प्यारे
कितने भाते हैं न्यारे।
अगर होते नहीं तारे
तो सूना-सूना प्यारे;
प्रेम मिलन दो कलियों का
जानें, न होते न्यारे।
तारक पथिकों का संबल
मिलन के संकेत तारे;
ये जगत के सुचिर सहचर
अनाथों के नाथ प्यारे।

क्योंकि भूख और प्यास है भाई!
सोचें विचार करें।
आगे पीछे देखते चलेंगे
एक साथ कदम मिलाते चलेंगे?
सरहुल पर्व तो अपने आप पहुँच रहा है
ब्याकुल होने की बात नहीं है।
किसी को छोड़ कर भाग नहीं जायँ
एक अखाड़े में एक साथ नाचेंगे।
हे भाई! तुम और मैं इस धरती पर,
दो ही दिन के लिये इन आँखों में है
(अत:) एक दूसरे से वैर नहीं करेंगे
इस जीवन के पथ पर।

40. गेना

बा लेकम् आला लेन गतिङ्
बा लेका गेम् गोसो तन
चन्डु: लेकम् तुरे लेन
चन्डु: लेक गेम हसुर तन
सुपिद् चेतन् गोलन्ची बा गतिङ्
गोलन्ची बा उयु: जन
काटा लतर पोला दोरे गतिङ्
पोला दोरे नो जोर जन।
ति: र: साका चुड़ी गतिङ्
साका-चुड़ी रपुद जन
रिगि-मिगि किरिञ् किचिरि
पड़िय किचिरि केच: जन।
—बारूडीह, दिसम्बर, 1959।

39. ने जीदन होरा रे नेय सुसुन्

(गेना)

जदुर सुसुन् निरे दौड़ी दादा
सरजोम् बाए तेबः तन;
ओर जदुर, गेना सुसुन् दादा
मणि तेकिङ् मेने जद।
लई रेंगे दाः तेतङ दादा
उड़ुयाः लङ् विचारेय लङ्;
अयर तयोम् ले लेय लङ् दादा;
मोसा तेलङ् चन्डाङ्ेय लङ्।
सरजोम् बा तेबः तन दादा
कलङ् कौ-बौ नाः
कलङ् निपिर बप गेय दादा
मिदे रेलङ् सुसुना।
अम् अञ् ने धरती रे दादा
बर सिङ गे ने मेदे रे;
कलङ् हपाड़ दाया दादा
ने जीदन होरा रे!

—बारूडीह, फरवरी, 1960।

(हिन्दी)

ये नाच जीवन के पथ पर

जदुर नाच दौड़धूप कर
साँखू के फूलों को पहुँचा रहा है;
और जदुर और गेना नाच
धीरे से पहुँचायेंगे कह रहे हैं।

(हिन्दी)

फूल के समान तुम खिली थी
फूल के समान ही मुरझा भी गई;
चाँद के समान उदित हुई थी
चाँद के समान ही अस्त हो गई।

खोपा पर के गोलन्ची फूल प्रिये;
गोलन्ची फूल गिर गए;
पैर की अँगूठी पर का पोला
पोला तुम्हारा खिसक गया।

हाथ की साका--चूड़ियाँ प्रिये!
चूड़ियाँ फूट गई;
झलमलाता वस्त्र प्रिये!
पाड़वाला वस्त्र तुम्हारा फट गया।

41. गेना

कुरु जाँगल दिसुमरे गतिङ्
हस्तिनापुर नुतुम् नगरः
नङ् को परिया रे गतिङ्
रजा कोवः सुन्दर नगर।

कचिरोम् इतवाना गतिङ्
कौरव को पाण्डव को;
कौरव मोणे हिसी गतिङ्
मोगेया पाण्डव को।

कुरुक्षेत्र पिड़ी दोरे गतिङ्
हनेः जिली मीली या;
सार सिणय--सोणोयरे गतिङ्
कपि बिजिर बलङा।

—बारूडीह, सितम्बर, 1959।

(हिन्दी)

कुरु जंगल देश में प्रिये!
हस्तिनापुर नामक नगर।
अति प्राचीन काल में
था राजाओं का सुन्दर नगर।।

क्या नहीं जानते प्रिये?
वे कौरव और पाण्डव!
कौरव थे सौ प्रिये
पाँच थे पान्डव।।

कुरुक्षेत्र का मैदान प्रिये!
देखो झलमला रहा है।
तीर की सनसनाहट प्रिये
फरसा चमचमा रहा है।।

42. करम

सिद रेय: चली बली,
अलो रे होम् हियतिङा;
सेनो: वालङ् दोलकमी,
उरेया लङ् हासा,
वैयालङ् मरङ् लोयोङ्!

अञ तलङ् गोओय हासा,
अम् तलङ् दूपिले में;
लन्दायालङ् जगरेय
उरेया लङ् हासा
वैयालङ् मरङ् लोयोङ्!

—बारूडीह, अक्तूबर, 1960।

(हिन्दी)

पहले का चहल-पहल—
उसकी चिन्ता मत करो
चलो काम पर चलें
दोनों मिट्टी कोड़ोंगे
बनायेंगे बड़ा-सा खेत!

मैं मिट्टी कन्धे पर ढोऊँगा
तुम सिर पर ढोओ
हँसेंगे, बोलेंगे
दोनों मिट्टी कोड़ेंगे
बनायेंगे बड़ा-सा खेत!

43. करम

गड़ नेसः, गड़ हन्सः,
कड़े बा तरल-तरल,
कहोञ् लेलेम;
तिरिरिरि रुतु सड़ी रे
कहोञ अयुम् म!

उरिः गई को नेय मेन्ते,
कड़े बा रेञ् हीड़ि जन्ते,
कहोञ् लेले म;
तिरिरिरि रुतु सड़ी रे,
कहोञ् अयुम्म!

ओको होरम् सेनोः जन,
मन्डा रटि बनोः जन,
कोरेञ् दणम;
तिरिरिरि रुतु सड़ी रे,
कहोञ् अयुम्प!

अञ् दोञ् कोंक गिड़िजन्,
निद-सिंगी नुबः जन,
कोरेञ् नमे म;
तिरिरिरि रुतु सड़ी रे,
कहोञ् अयुम्प!

—बारूडीह, अगस्त, 1960।

(हिन्दी)

नदी के इस पार और उस पार
कास के उजले-उजले फूल हैं
पर, मैं आपको नहीं देखती हूँ
तिरिरिरि बाँसुरी के स्वर में
मैं आपको नहीं सुनती हुँ।

गाय, बैल समझ कर
कास के फूलों में ठगा गई
मैं आपको नहीं देखती हूँ
तिरिरिरि बाँसुरी के स्वर में
आपको नहीं सुनती हूँ।

कौन-सा रास्ता लिया?
कहीं आपका चरण-चिन्ह तक नहीं है
मैं कहाँ खोजूँगी?
तिरिरिरि बाँसुरी के स्वर में
मैं आपको नहीं सुनती हूँ।

मैं तो पागल हो गई हूँ
रात--दिन अंधकार ही अंधकार!
कहाँ खोजूँगी?
तिरिरिरि बाँसुरी के स्वर में
आपको नहीं सुनती हूँ!

44. करम

(मुण्डारी)

सकेरे रुतु सड़ी तन
डाड़ी रे मेद्दः जोरो तन
दाइगो दाइगो दोला
सान सकम् बीर ते।

अम् सबेम् टुँकी
अइङ् तलङ् सबेबयर;
चम्पा बा नेदोला
सान सकम् बीरते।

चन्दर हेरेल ओतोङ् तन
इदि जई बेन् होमोसाते;
कए केरेद् बेरेद दोला
सान सकम् बीरते।

(हिन्दी)

उपवन में बाँसुरी बज रही है,
इधर पनघट में आँसू झर रहे हैं
दीदी गो चलो
लकड़ी और पत्ती तोड़ने जंगल चलें।

तुम टोकरी पकड़ो,
मैं रस्सी पकडुँगी,
लो चम्पा फूल
लकड़ी और पत्ती तोड़ने जंगल चलें।

दुष्ट चन्द्र पीछा कर रहा है,
इसको भी तुम दोनों मिलाते चलो,
यह दिक तो नहीं करेगा?
लकड़ी और पत्ती तोड़ने जंगल चलें।

45. तिसिङ् निद
(करम)

तिसिङ् अञदो इसु दुकु
कहोञ् दुड़मन सुकु
तिसिङ् निद चिमिन जीरे
जीरे जीर जना रे।

समड़ोम लेक सुगड़ तञ्
कुमु रेहोञ् लेलाना;
पन्ती रेलिङ् दुब कन
जेतन: कए जगा रे!

हपे-हपे: बिरिद् जन
हपे-हपे: सेनो: जन;
हेतव कए हेत केद
लेल् केन् लेल् केना रे!

अचाकतेञ् एयोन कन्
एसेकरगेञ् गितिय: कन
उड़व-उडुव:, सुकुद् सुकुद्
मेद्द: मेदते जोरो जना रे!

—बारूडीह, जुलाई, 1960।

(हिन्दी)

आज की रात

आज मुझको दुखी रहना पड़ा
मुझको सुख की नींद नहीं आई;
आज रात कितने मेरे मन में
हिलोरें उत्पन्न हुईं।

हीरे के समान मेरा सुन्दर प्रेमी
स्वप्न में आ गए;
हम दोनों पंक्ति में बैठे हैं
पर, कुछ वे नहीं बोले।

चुपके-चुपके उठ गए
चुपचाप चले गए;
घूर कर देखे तक नहीं
मैं देखते ही रह गई।

अचानक नींद खुली,
अकेले ही सोई हुई हूँ
सोचती-सोचती, सिसकती
आँखों से आँसू छलक पड़े।

46.करम

ओहरे तञ् सुगड़
नेते कजि अयुम् लेम,
बनो: चितम् उड़गो;
चिन: मेन्ते होम् जुदन तन

मिस कजि हेत लेम्
कम् गेचि जगरा,
बनो: चितम् उड़गो;
अम् करे अञ: जी तञ चिलिकओ

कम् गेचि हेतया
इसु गेचिङ् कण जन;
बनो: चितम् उड़गो;
बगे किंते चितेञ् चिकओ इदो!

कम् गेचि रूवड़:
नमिनङेञ् कजितन,
बनो: चितम् उड़गो,
अम् नकम् बगे तुकञ् तनम् नेरे?

—बारूडीह, जून, 1961।

(हिन्दी)

हे मेरे प्रिय!
जरा इधर सुन लीजिए
क्या आपकी चिन्ता नहीं?
क्यों बिछुड़ रहे हैं?
क्या आपको चिन्ता नहीं?

एक बार घूर कर देख लीजिए
क्या बात भी नहीं करेंगे?
क्या चिन्ता नहीं करते?
आपके बिना मेरा मन जाने क्या हो गया
क्या चिन्ता नहीं करते?

क्या पीछे नहीं ताकेंगे?
क्या मैं अत्यन्त दुष्ट हो गई हूँ?
क्या चिन्ता नहीं है?

छोड़ जाने पर मैं क्या से क्या हो जाऊँगी
क्या चिन्ता नहीं है?

क्या कभी नहीं लौटेंगे?
इतना जो कह रही हूँ;
क्या चिन्ता नहीं है?
आप ऐसा छोड़ कर जा रहे हैं
क्या चिन्ता नहीं है?

47. करम

तिरि रिरि रुतु ताल
कोरे बगे जन जीतञ्:
कोतेरे अए गेचि, ओको चैला कहोए दुड़मन्!

तिसिङ् नमिन् अदिं निद
इदि केदए कोते जीतञ्;
कोतेरे अए गेचि, ओकोचैला कहोए दुडुमन्!

सेनो: मोनिङ् कहो मोनिङ्
तारे-नारे तन जी तञ्;
कोतेरे अए गेचि, ओको चैला कहोए दुडुमन्!

—बारूडीह, जून, 1962।

(हिन्दी)

मधुर स्वर में, बाँसुरी की तान छिड़ गई
पर, मेरा मन कहाँ छूट गया।
किधर? वही कि जो छैला नहीं सोया है!

आज इतनी आधी रात को
कहाँ वह मेरा जी ले गया,
किधर? वही कि जो छैला नहीं सोया है!

जाने का मन करता, नहीं जाने का भी
क्या करूँ, क्या नहीं?
किधर? वही कि जो छैला नहीं सोया है?

48. करम

ओको तेरे ओको छैला,
रुतुई ओरोडे गोले दुरडे,
आहो, एला हो
अञ: जी दो अलय बलय तन रे!

रुतु रूम्बुल् तम्बुर तन
कुड़म् बितर जी बितर् रे;
आहो, एला हो
अञ: जी दो अलय बलय तन रे!

गड़ा रेचि बुरू परोम् रे
दुबा कनए ए न जोलारेचि?
आहो, एला हो!
अञ: जी दो अलय बलय तन रे!

(हिन्दी)

किधर कौन छैला
बाँसुरी बजाता, कभी सिसकारी मारता गाता,
अहा, ओहो!
मेरा मन तो ब्याकुल है!

बाँसुरी की तरङ्ग घुल रही है
छाती के भीतर हृदय में;
अहा-ओहो!
मेरा जी तो ब्याकुल है!

नदी में या पहाड़ के उस पार
बैठा होगा उस घाटी मे;
अहा, ओहो!
मेरा मन तो ब्याकुल है।

49. दोल सोंगे को

(करम)

बा बगैचा रे

बा उरय बरया;
दोल सोंगे को दोल
बा पेटेः तेबुवा।

मिद् सुतम् बर सुतम्
बाबु गुतुया;
दोल सोंगे को दोल,
बा पेटेः तेबुवा।

ने घड़ी बु सेनोः रे
नमेय बु ने घड़ी रे;
कहो सोंगे को क-हो
का-नमोग तयोम्ते।

(हिन्दी)

पुष्प की वाटिका में
फूल खिले हुए हैं;
चलो साथियों;
फूल तोड़ने चलें!

एक सूत, दो सूत
फूल की माला गूँथें;
चलो साथियों!
फूल तोड़ने चलें।

अभी चलने पर
मिलेंगे फूल इसी क्षण;
नहीं तो साथियों!
नहीं मिलेंगे पीछे!

50. दोलङ दाइना

(करम)

नेते जरगी गम लेद
बुरू साके सड़ी लेन
तिरि रिरि रूतु सड़ी तन

दोलङ् दाइना दो लङ्!
बुरू पुटुकुई हालङ्!

चिकन् कमी बुरु रे
मेने रेको दाइ रे
कलङ् लन्दय मेने यलङ् रे

दोलङ् दाइना दोलङ्!
बुरु पुटुकुई हा लङ्!

रुड़ङ् सेटे:य लङ् बेग
सेनोग लङ् बेग बेग
जीदो अक्ल-बक्ल तन दाइना

दोलङ् दाइना दोलङ्!
बुरु पुटुकुई हालङ्!

(हिन्दी)

चलो दीदी

इधर पानी बरसा
पहाड़ और उपवन गूँज उठे;
तिरि रिरि के स्वर में बाँसुरी बज उठी
दीदी! हे दीदी चलो
पहाड़ी रुगड़ा चुनने!

पहाड़ पर क्या काम है?
दीदी जब ऐसा पूछेंगे तो?
दोनों नहीं हँसेंगे
दीदी! हे दीदी चलो
पहाड़ी रुगड़ा चुनने!

धान जल्दी कूटें,
जल्दी ही चलें
मन आकुल-ब्याकुल हो रहा है
दीदी! हे दीदी चलो
पहाड़ी रुगड़ा चुनने!

51 करम

रोला डाड़ी रोलो:-रोलो:
दा: परिड़ तन
कनम् हिय तिङ्;
बुरागेयञ् मेन्दो बनो:!

डाड़ी अतोम दिरी रे
दुबे दुबेम् तिकिनेय,
कनम् हिय तिङ्;
बुरागेयञ् मेन्दो बनो:!

(हिन्दी)

रोला डाड़ी का रल-रल पानी
छलक रहा है
क्या चिन्ता कर रही हो?
पानी भरूँ सो तो नहीं!

डाड़ी के किनारे पत्थर पर
बैठे-बैठे दोपहर कर देती हो
तुम क्या चिन्ता करती हो?
पानी भरूँ सो तो नहीं!

52. करम

बिर होरम् हिजु: लेन
समा गे होम् हिजु: लेन
गतिङ् तोवा बा दो
कचिम् नम् लेदा रे!

तरल-तरल तोवा बा
मोगो-मोगो सोवन बा
गतिङ् तोवा बा दो
कचिम् नम् लेदा रे!

(हिन्दी)

वनपथ से हो आये
पर कुछ लेकर नहीं आये
प्रिय, तोवा फूल नहीं मिला?

उजले-उजले तोवा फूल
मह-मह गमकने वाला फूल
प्रिय, तोवा फूल नहीं मिला?

53. करम
(मुण्डारी)

ओकोरेन् होड़ो इदो
सेनो: जनए हेता होरा;
कुलि कुलि कहोञ् कुलि कि:आ
लेता कई लेकञ् ठोर कि:आ।

एसेल हेन्दे होड़ो मेनई;
पुरअ: मरङ् सलँगी बँगई
सईकिल चेतन रेगे परोम् जन
लेला कई लेकञ् ठोर कि:आ।

(हिन्दी)

जाने कहाँ का आदमी
घूर घूर कर देखता चला गया।
पुछने वाला था पर मैं नहीं पूछा
देखा हुआ-सा ही लगा।

वह आदमी साँवला है,
अधिक ऊँचा नहीं है।
साइकिल पर चढ़कर पार हो गया
देखा हुआ-सा ही लगा।

54. करम

उरी: चिरेम् गुपी तन
हेन्दे चतोम् धँगड़,
गड़ परोम् गी परोम जन
हनि: जोम् तन गई बाबा।

दौड़ी में जू बेग
गेले तन गोड़ा बाबा,
गड़ परोम् गई परोम् जन
हनि: जोम् तन गई बाबा।

रसिक चन्द्र लेल् तन
लेल केते लन्दा तन,
रोवाधँ गिड़ि को ल सड़ी तन
हनि: जोम् तन गई बाबा।

(हिन्दी)

क्या तुम गाय चरा रहे हो?
ऐ काला छाता धारी युवक!
नदी पार गाय पार हो गई,
देखो, गाय धान खा रही है।

जाओ दौड़ो जल्दी
गोड़ा धान फूट रहे हैं,
नदी पार गाय पार हो गई,
देखो, गाय धान खा रही है।

रसिक चन्द्र देख रहा है
देख-देख कर हँसी आ रही है,
युवतियाँ मजाक से कहती हैं—
देखो, गाय धान खा रही है।

55. करम

अखोन्डो बिराते—
सीता सोती कुम्बुडु जन,
दो दोल, दोलबु सेनोग
सीता सोती देवी पीचाते!

सेनो गबु सोबेन—
कुलि इदि कोवबु लोंकाहोर,
दो दोल, दोलबु सेनोग
सीता सोती देवी पीचाते!

रसिक चन्द्र लेल् केन
एन कजी सुकु जन,
सोबेन् वीर को सम्पोड़ेन् जन
सीता-सोती देवी पीचाते!

—बारूडीह, जुलाई, 1959।

(हिन्दी)

अखण्ड वन से—
सती सीता चोरी चली गई,
चलो-चलो हम सब चलेंगे,
सती सीता की खोज में।

चलेंगे सभी—
पूछते चलेंगे लंका जाने का रास्ता
चलो-चलो हम सब चलेंगे
सती-सीता की खोज में।

रसिक चन्द्र देख रहा था
वह बात पसन्द की गई,
सभी वीर तैयार हो गये
सती सीता की खोज में।

56. करम

कोरस—
चिक लेरे वैयो: व—
रेंगे: लेक जेतय मुदई बंकुव
चिक लेरे वैयो: व!
ओते अड़ी, पुंजी पोटोम्
अदे जन हो सोबेन्।
उरी: मेरोम् ओड़: दुवर
बुड़व् जन हो, टुवर!
रसिक चन्दर कजीतन
कमियबु कबु लन्डियन।

—बारूडीह, जुलाई, 1959।

(हिन्दी)

क्या किया जाय—
गरीबी के समान कोई दुष्ट नहीं है
क्या किया जाय?

खेत वारी और पूँजियाँ
सब के सब खो गयीं।

गाय, बकरी और घर द्वार
डूब गये, हम होगये अनाथ।

रसिक चन्द्र कहता है
काम करेंगे आलसी नहीं बनेंगे।

57. करम

बारूडीह जोजो टोलारे
करमे को विद कद
पयला किचिरि ओटङ् तन अखड़ा रे।

दुरङ् तन् को दुरङ् तन
रू तन् को रू तन
पयला किचिरि ओटङ् तन अखड़ा रे।

रसिका चन्द्र सुसुन् तन
रसिका तेः बुल कन
पयला किचिरि ओटङ् तन अखड़ा रे।

—बारूडीह, अक्तूबर, 1959।

(हिन्दी)

बारूडीह गाँव के जोजो टोले में
(लोग) करम गाड़े हैं।
अञ्चल लहरा रहा है अखाड़े में!

गाने वाले गा रहे हैं
बजाने वाले बजा रहे हैं,
अञ्चल लहरा रहा है अखाड़े में!

रसिक चन्द्र नाच रहा है
आनन्द से व्याकुल है
अञ्चल लहरा रहा है अखाड़े में!

58. करम

ने खलोम् चिक जन
दुमङ् सड़ी होक जन,

हायरे, जोजो सुबा
दुम्बु ओमोन् जन रे!

ने खलोम् धँगड़ को
रुतु कको सबन,

हायरे, रुतु साड़ी
कहोञ् अयुमन रे!

ने जरगी दा: रे
मरङ् गड़ दा: बनो,

हायरे, जेतन लारी
कहो ओटङ् तन रे!

(हिन्दी)

इस साल क्या हो गया—
कि माँदर की आवाज बन्द हो गई,

हाय रे, इमली छाया,
(यहाँ) घास उग आई हैं।

इस साल युवक लोग
बाँसुरी नहीं पकड़े हैं,

हाय रे, बाँसुरी की आवाज
(इस साल) मैंने नहीं सुनी है।

इस बरसात में
बड़ी नदी में पानी नहीं है,

हाय रे, ऊपरी बादल
(इस साल) नहीं उड़ रहे हैं।

59. करम

बुरू गड़ जप: रे
कुदा दारु सुब रे
चिको मेन्ते?
नागोर कए हिजु: जनगो,
चिको मेन्ते?
तल निद परोम् जन
अडो: इपिल् तुर जन
चिको मेन्ते?
नागोर कए हिजु: जन गो,
चिको मेन्ते?
निद सिंगीञ् हियतिङ
गिति: दुड़मेञ् चकतिङ
चिको मेन्ते?
नागोर नेकाए हिड़ि कि:ङ गो,
चिको मेन्ते?

—बारूडीह, नवम्बर, 1959।

(हिन्दी)

पहाड़ी नदी के किनारे
जामुन वृक्ष के नीचे
किसलिये?
नागर नहीं आये सखी!
किसलिये?
आधी रात बीत गई
भोर का तारा उग आया,
जाने, किसलिये?
नागर नहीं आये, सखी!
किसलिये?

दिन रात मैं सोचती हूँ
सोने तक चिन्ता करती हूँ
जाने, किस लिये?
नागर ने इस प्रकार ठग दिया, सखी!
किस लिये।

60. करम

नेक–नेक गतिङ् चिमे चिकन् जन
अञ् दोञ् दन्दजन,
नेकन् कमी कोरेम् इतु लेदञ् दन्दजन।

मोड़ेय सड़ीते, सड़ी कि: ञम् नेक
अञ् दोञ् दन्दजन,
नेकन् कमी कोरेम् इतु लेदञ् दन्दजन।

ओको अखड़ारे, सुसुनिङ्म् गतिङ्
अञ् दोञ् दन्दजन,
नेकन् कमी कोरेम् इतु लेदञ् दन्दजन।
—बारूडीह, नवम्बर, 1959।

(हिन्दी)

इस प्रकार प्रिय, क्यों तुम बन गये
मैं आश्चर्य में पड़गयी,
आश्चर्य करती हूँ, ऐसा काम तुमने कहाँ सीखा

पाँच साइड़यों से तुमने मुझको पहनाया
मैं आश्चर्य में पड़ गयी,
इस प्रकार का काम तुमने कहाँ सीखा?
आश्चर्य में पड़ी हूँ।

(अब) तुम किस अखाड़े में मुझको नचाओगे?
मैं आश्चर्य में पड़ गई हूँ,
इस प्रकार का काम तुमने कहाँ सीखा?

61. करम

चिकन् होयो हिजुः लेन
कुड़मेरे ठोगे जन्
कुड़म् बितर् जीदो लिपिर केन
नेकन् होयो कहोञ ठोरन।

जिलिमिलि सड़गीरे
किचिरी होञ सोबोद् केन,
मोणेय सड़ी कोरे चिकजन
नेकन् होयो कहोञ ठोरन।

अहो गतिङ् सुगड़ रे!
चिमेन्ते होम् नेकन् जन,
इकिर् दगे रेहोम् चड़ु किः ञ
नेकन् होयो कहोञ ठोरन।

—बारूजीह, नवम्बर, 1959।

(हिन्दी)

कौन-सी हवा आई
मेरी छाती में लग गई,
छाती में हृदय धड़क उठा
ऐसी हवा को मैंने नहीं जाना था।

झिलमिल करते झरने में
मैंने कपड़ा साफ किया था,
जाने, पाँच साड़ियाँ क्या हो गयी?
ऐसी हवा को मैंने नहीं जाना था।

हे मेरे सुन्द प्रिय!
तुम क्यों ऐसे बन गये?
गहरे पानी में तुमने मुझको डुबा दिया
ऐसे हवा को मैंने नहीं जाना था।

62. करम

तीरे दो साका चूड़ी
सड़ी तन सेके: सेके:
कट रे पोला जिड़िब्-जिड़िब्
अहो गतिङ् कगेञ् बगेमेय!

मयँ रेदो सड़ी मल्-मल्
कुड़म् रेदो जुला झिल्-झिल्
जुला चेतन् पयला फिर्-फिर्
अहो गतिङ् कगेञ् बगेमेय!

गज बज कन् रे यो
डुगु मुगु चउडलन् रेयो
गड़-बुरू परोमो: रेयो
अहो गतिङ् कगेञ् बगेमेय।

—बारूडीह, सितम्बर, 1959।

(हिन्दी)

हाथ में साका और चूड़ियाँ
(जो) सक-सक बज रही हैं,
पैर में पैरियाँ बज रही हैं
प्रिये! मैं तुमको नहीं छोड़ूँगा।

कमर में मल-मल साड़ी
छाती में जाकिट सुशोभित है,
जाकेट के ऊपर अञ्चल लहरा रहा है
प्रिये! मैं तुमको नहीं छोड़ूँगा।

गाजा-बाजा भी क्यों न हुआ हो (दूसरे के साथ)
डुग-मुगु चौडल भी क्यों न लगा हो (दूसरे के साथ)
मैं तुम्हारी प्राप्ति के लिए नदी, पहाड़ पार करूँगा
(संकट झेलूँगा)
पर प्रिय मैं तुमको नहीं छूड़ूँगा।

63. करम

डुल्की लो: दुरङ् रे रसिक:
कुड़ी कोप लेम्रे सुसुन् सुकुव,
मेन्दो ने सुकु हुड़िं खोन्
बनो: सुकु सुती जन्ते।

मेन्दो ने अखड़ा दुड़ा
हतु तलरे बुगिन् गेय,
सिंगी सटुब् कमी लग को
मिद् कड़ी दुरङ्रे: रड़े:जद्।

—बारूडीह, अगस्त, 1959।

(हिन्दी)

ढोलक की ताल के साथ गाने में आनन्द आता है
युवती से स्पर्श होने से नाचने में मन लगता है,
पर, यह सुख तो क्षण भर के लिये ही
चेत जाने के बाद सुख नहीं मिलता है।

परन्तु यह अखड़ा—
गाँव में अच्छा ही है,
(क्यों कि) दिन भर के काम से थके जनों की थकावट को
गीत को एक कड़ी में ही दूर कर देता है।

64. करम

दुरडो बु दुरङ् केद
तेल होको तेल केद,
दुमङ् सड़ी कहो जुगुतु जन
अहो भाई चिबु चिक जन?

रसिक तेबु दुरङ् लेद,
रसिका तेको तेल लेद,
दुमङ् ते तबु ताल् भँगव जन
अहो भाई चिबु चिक जन?

रूपा लेकन् अखाड़ा रे
सुसुन् तनबु ने तेते: रे
मेन्दो दुमङ् तबु कहो जुगुतु जन
अहो भाई चिबु चिक जन।

—बारूडीह, अक्टूबर, 1964।

(हिन्दी)

हमलोगों ने गीत भी गाया
(युवतियों ने) दुहरा भी लिया,
(पर) मांदर की ताल उपयुक्त नहीं जँची
भाइयो! हम सब (आज) क्या हो गये?

आनन्द से ही हमलोगों ने गाया
आनन्द से ही दुहरा भी लिया,
मांदर से ही रंग में भंग हुआ
भाइयों! हम सब (आज) क्या हो गये?

रूपा जैसा अखाड़े में—
हमलोग नाच रहे हैं चाँदनी में,
पर, मांदर ही उपयुक्त नहीं है
भाइयों! हम सब क्या हो गये?

65. करम

बिर तबु चब तन
ओते तबु पीड़ि तन
दारू बु रोवा या;
गोड़ा पिड़ी रेबु रोवाया
सारी सारी!

उली, कन्टड़, कुद बारू
मु द् हेस: जोतो दारू
दारू बु रोवाया;
हुड़िङ् मरङ् तेबु रोवाया
सारी सारी!

जेते ने:गे चब तन् रे
जरगी लोसोद् हिजु: तन् रे;
दारू बु रोवा या
जङ ते, कोतोतेबु रोवाया
सारी सारी।

बिर तबु चब जन् रे
दारू का नमोग रे
कोरेबु उम्बुलेन
रसिक चन्द्र दुरङ् केद
सारी सारी।

(हिन्दी)

जंगल खत्म हो रहा है
धरती बंजर बन रही है;
अत: गाछ रोपेंगे।
टाँड़ के आड़ में रोपेंगे,
कतार, कतार।

आम, कटहल जामुन, कुसुम,
फरसा, पीपल आदि आदि,
गाछ रोपेंगे।
छोटे बड़े सभी गाछ रोपेंगे,
कतार, कतार।

गर्मी जब खत्म होती है
बरसा जब आने वाली होती है
बीज और डाल काटकर रोपेंगे,
कतार, कतार।

जंगल जब समाप्त हो जायगा
उस समय गाछ नहीं मिलेगा।
कहाँ हमलोग पायेंगे?
रसिकचन्द्र गा रहा है
सच सच ही।

66. सँगिन् तेगे चि?

(करम)

रुवड़:म् चि कम् रुवड़ :—
ओहरे तञ् सुगड़
गतिङ् गतिङ्
ओकोते होम् सेनो: तन, सँगिन् तेगेचि?

मिस कजि जगर तुकम्
अञ् लो: मेद्द: जोरो तुकम्
गतिङ् गतिङ्;
ओकोते होम् सेनो: तन, सँगिन् तेगेचि?
जौ जारू जगर रुसोम्
कचिम् उड़ु: जद दिसोम्
गतिङ् गतिङ्
निठुरो सोंगति अम् दो, उड़ु: बनो: चि?

—बारूडीह, जून, 1962।

(हिन्दी)

लौटैंगे कि नहीं
ओह! मेरे प्रिय!
प्रिय, प्रिय!
कहाँ जा रहे हैं, क्या दूर ही?

एक बात भी तो बोल जाइये
मेरे साथ आँसू गिरा जाइये
प्रिय, प्रिय!
कहाँ जा रहे हैं, क्या दूर ही?

जहाँ नित्य आलाप करते थे
क्या याद नहीं करते वह दुनिया?
प्रिय, प्रिय!
निष्ठुर प्रिय! क्या चिन्ता नहीं है?

67. करम

ने साल चिबु चिक जन्
जी दो हुल: जन्, जीदो हण जन्
सोबेन् मुलि नुब: नुब:।

लेपेलोक मोने तन, जगरोक सन तन्
जीदो हुल: जन्, जीदो हण जन
सोबेन मुलि नुब: नुब:।

अयर ते चिलिक बु सेने
नेयागे: इयम् तन चन्दर,
जीदो हुल: जन, जीदो हण जन
सो बेन् मुलि नुब: नुब:।

(हिन्दी)

इस साल हमलोग क्या हो गये,
जी टूट गया, मन रुष्ठ हो गया,
सब ओर अन्धकार ही अन्धकार।

किसी को देखने का और बात करने का मन नहीं करता है
मन तो टूट गया' मन तो रुष्ठ हो गया,
सब ओर अन्धकार ही अन्धकार!

आगे कैसे चलेंगे, यही चिन्ता करता है 'चन्द्र'
मन तो टूट गया, मन तो रुष्ठ हो गया
सब ओर अन्धकार ही अन्धकार।

68. करम

अबु सोबेन् आदिवासी
नङ् रे अबु बिर वासी;
कुला बुड़ी सोबेन् सोंगे साथी
निकु अबु सोबेन जामा वासी।

जेटे जरगी रबङ् कोरे
रेंगे तेतङ् दुकु कोरे;
कुला लता दरु उम्बुल बुगिन्
तैकेनबु सोबेन् जामा कोरे।

नेते होड़ोबु सँगीजन;
सेणा पुँजी नेते ओमोन् जन्
ओते अड़ी अबु बै तद
हतु तुका रेबु तैन जन।

—जून, 1960।

(हिन्दी)

हम सभी आदिवासी लोग
प्राचीन काल में बनवासी थे;
बाघ भालू सभी हमारे साथी थे
ये ही हमारे सहवासी थे।

गर्मी, बरसात और जाड़े में
भूख-प्यास और दुखों में;
बाघ की माद और वृक्ष की छाया अच्छी थी
हमलोग थे सब साथ में।

इधर जन-संख्या बढ़ी
विद्या-धन अँकुरित हुआ;
खेत-आड़ हमने बनाया
हमने गाँवों को बसाया।

69. करम

ओको जोला रे गतिङ्
चिक जनम् तिसिङ्
दुरङ् तनम् चि ईयम् तनम्
अञ् बारि गेय गतिङ् बेड़ा गोड़ा रिङ्।

तीरे दत्रोम् सब कन् गे
बाबा ति:रे सब कनगे
चिलिकते, कम् हड़गुन
अञ् बारि गेय गतिङ् बेड़ा गोड़ारिङ्।

सोबेन् सोंगे को सेनो: जन
अञ् बारि रेगे सरे: जन
जेतय वँकुव, हिजु: दड़ियम्
अञ् बारि गेय गतिङ् बेड़ा गोड़ा रिङ्!

—बारूडीह, जून, 1962।

(हिन्दी)

किस घाटी में प्रिय!
क्या हो गये आप आज,
गा रहे हैं या कराह रहे हैं
प्रिय, मैं तो यहाँ बेड़ा गोड़ा में हूँ।

हाथ में हँसुआ धरा का धरा है
धान हाथ में धरा करा धरा है
(आप को सुन कर)
किसलिये? नहीं उतरते हैं
प्रिय, मैं तो यहाँ बेड़ा गोड़ा में हूँ!

सभी सहेलियाँ चली गई
मैं अकेली ही बच गई हूँ
कोई नहीं है, आ सकते हैं।
प्रिय, मैं तो यहाँ बेड़ा गोड़ा में हूँ।

70. करम

हिजु गञेम् मेन् तुकद
भादो करम एकादशी रे,
परोम् जन कम हिजु: जन
अहो गति कोरेम् चिकजन?

हिजु गए मेन्ते बोले
गुतु लेदाञ् बा रसिकते
डाली रेगे बा गोसो जन
अहो गतिं कोरेम् चिकजन?

सिंगी बुड़ाञ् हियतिङ
गिति: दुडुमेञ् चक तिङ
कुमु रेदो अलङ् जम कन
अहो गतिं दुडुम् एयोन् एसे करे जन।

—बारूडीह, अगस्त, 1959।

(हिन्दी)

कहे थे—"मैं आऊँगा"
करम नाचने भादो एकादशी में।
पर पार हो गया, नहीं आये
प्रिय! कहाँ क्या हो गये?

आयेंगे, इसी विचार से
मैं यत्न से फूल गूंथ रखी थी।
पर डलिया में ही सूख गये
प्रिय! कहाँ क्या हो गये?

दिन भर चिन्ता करती हूँ
सोते तक पश्चाताप करती हूँ।
स्वप्न में तो दोनों मिले रहते हैं
प्रिय! पर जाग जाने पर अकेली रहती हूँ।

71: करम

हग हग पग जन
ओते आड़ी चब जन।
ओड़: दुवर् उजड़ जन
अहो हग चिमे चिक केद?

ओते आड़ी चब जन
बिङ् लेकम् सोपोद तन।
हग सुकु अदे तुक जन
अहो हग चिमे चिक केद?

हग लेक सुकुरसिक—
दिशुम रे एट: कञ् लेल जद।
उल्टा केदम् मेन्दो ने दिशुम्
अहो हग चिमे चिक केद?

मियद् तुक रेन् कोको होनङ्
मैनो लेकबु जगर् लेक:।
तुम्बुली लेकम् तुपुङ तन
अहो हग चिमे चिक केद?

—बारूडीह, अस्त, 1965।

(हिन्दी)

भाई-भाई में बैर हो गया
बाँटते-बाँटते खेत खत्म हो गये।
घर द्वार उजड़ गये
हे भाई! तुमने क्या कर दिया?

खेत-आड़ खत्म हो गये
तो सांप की तरह दूसरे को डँसने लगा।
भ्रातृ-प्रेम तो खो दिया तुमने
हे भाई तुमने यह क्या किया?

भाई के समान सुख-आनंद
देश में दूसरा नहीं देख रहा हूँ।
उलटा दिया इस देश को
हे भाई! तुमने यह क्या किया?

एक घोंसले के हम पंछी हैं
मैंना के समान बातचीत करना चाहिये।
(पर) बिरनी की तरह दूसरे को डँस रहे हो
हे भाई! तुमने यह क्या कर दिया?

72. करम

पीटी-पीटी ककला जन
नगेरा-डुल्की सड़ी जन।
हटियारे कमी खुलव जन
नेकन् कमी कहो लेल कन।।

हतु हतु टोला-टोला
सेनो: जन को तञ् सोबेन् हग।
हेटियारे कमी खुलव जन
सीउ: चलु बाड़े को बगे केद।।

चौका उर नेक पका
टचका तेल एनक़ माजा।
हटिया हस नेकन् बुगिन् हस
उरो: सुकुव गोगो: रब ला।।

मिद् हफ़्ता तल हफ्ता
उरे केन को चौका हासा।
अहो हग हासा हम्बल् जन
उरो बलय, नेय नड़क हासा।।

—बारूडीह, जुलाई, 1959।

(हिन्दी)

—हाट-बाजार में हल्ला हुआ
नगरा, ढोलक पीटे गये—
हटिया में काम खुल गया
ऐसा काम नहीं देखा गया है।

गाँव-गाँव, टोले-टोले से
मेरे भाई सब चले गये।
हटिया में काम खुल गया
जोतना कोड़ना तक को छोड़ गये।।

चौका कोड़ना अच्छा है
रूपया कमाया जा सकता है।
हटिया की मिट्टी बहुत अच्छी है
कोड़ने में सरल है, मिट्टी हल्की है।।

एक हफ्ता, आधा हफ्ता
लोगों ने कोड़ी चौका-मिट्टी।
हे भाई, मिट्टी भारी हो गई
कोड़ना भारी हो गया, यह नगड़ा मिट्टी है।।

73. करक

श्री वृन्दा बिर् बितर्
गुपी तनए प्रभु गोपाल।
नेते हेन्ते: होनोर बेड़ तन,
उरि: गई को अतिङ् बेड़ तन।।

ति: रेदो डन्ड: चोतोर,
रंगा रुतु सबन गोपाल।
तिंगु-तिंगु रुतुए ओरोङ् तन,
रुतु तेदो अए गे: नुतुम कन।।

गोट बुरू बिर् कन्दर,
रुतुई ओरोड् तन गोपाल।
उरिः गई को रुतु को अयुम तन,
चेणे, जनवर जोतो को जमन् तन।।

बुरु बिर् कन्दराते
रुतु सड़ी ओटड् जन।
गोपी धँगड़ि को निर जन।
रुतु सड़ी गेको पिचा तन।

दारू दनाङते गोपाल
लेल् केनाए रसिक चन्दर।
मोचो-मोचो को लन्द जगर् तन
जुही चमेली बाको गुतु तन।।

—जुलाई, 1959।

(हिन्दी)

बृन्दा वन में—
प्रभु गोपाल गाय चरा रहे हैं
इधर-उधर घूम-फिर रहे हैं
गाय-बैल चरते फिर रहे हैं।

हाथ में डन्डा और छाता लिये हैं
रंगीन बांसुरी पकड़े हुए हैं
खड़े-खड़े वे बाँसुरी बजा रहे हैं
बांसुरी बजाने में तो नामी ही हैं।

समस्त वन पर्वत और कन्दराओं में
बांसुरी बजा रहे हैं गोपाल।
गाय-बैल बाँसुरी के स्वर ही सुन रहे हैं
चिड़ियां और जानवर सभी मिल रहे हैं।

पहाड़ों, वनों और कन्दराओं से
बांसुरी की तान उड़ गई।
गोप बालाएँ भाग गई
बाँसुरी की तान की ही पीछा कर रही हैं।

रसिक चन्द्र कहता है—कि गोपाल
गाछ की ओट से देख रहे थे।
(गोपियाँ) मुस्कुरा-मुस्कुरा कर बात कर रही थीं
जूही और चमेली गूँथ रही थीं।

74. चिटिङ्

(करम)

बुरु को सकेरे
तोवा बा दो तरल-तरल
गतिङ् रे तोवा बा दो ओकोय रोवा तद।

तरा तेदो मोय तन
तरा तेदो आला तन
गतिङ् रे मोगो-मोगो सुगड़ सोवन।

गोदे लेगे सनञ
असटु लेगे मोनि
गतिङ् रे तोवा बा-रे जिगे सुकु जन।

—मई, 1959।

(हिन्दी)

पहाड़ के उपवन में
तोवा फूल उजले-उजले खिले हुए हैं
प्रिये! तोवा फूल को किसने लगाया है।

कुछ कलियाँ हैं
कुछ खिल रहे हैं।
प्रिये! मह-मह सुन्दर गन्ध दे रहे हैं।

तोड़ने का मन करता है
नोचने का मन करता है
प्रिये! तोवा फूल में मन लग गया।

75. करम

पेटे: पतड़ सकम् लेक
अुञ् दोञ् गोसो जन,
कलिया ना गारे सुगड़
तञ् कगे: हिजु: जन!

सिंगि रटिञ् नुब: जन
दीया रटी बनो: जन
कलिया नागोर् सुगड़
तञ् कगे: हिजु: जन!

सेके: सेके: कल् कल गड़
नीरे सेने दण तन,
कलिया नागोर् सुगड़
तञ् कगे: हिजु: जन!

कहोए रिड़िङ् मेय चन्दर
दण मेयए जिदन सगर,
कलिया नागोर सुगड़
तञ् कगे: हिजु: जन!

—सितम्बर, 1959।

तोड़ी हुई पत्ती के समान
मेरा मन तो सहेली मुरझा रहा है!
(क्योंकि) कलिया नागर जो
मेरे प्रिय है, नहीं आये।

दिन भी अंधकार-सा लगता है
दीया भी नहीं है।
कलिया नागर—
मेरे प्रिय नहीं आये।

सक-सक, छल-छल करती नदी
दौड़ी दौड़ी खोज रही है,
कलिया नागर—
मेरे प्रिय नहीं आये।

चन्द्र कहता है —"नहीं भूलेगी"
खोजती रहेगी जीवन भर।
हाय! कलिया नागर
मेरे प्रिय नहीं आये।

76. करम

इसु दिनबु होब जन
मेद् लेपेल् का होब जन;
लम: जङ् लेकाबु पंडिलकन
देलाना बाई एलाबु सुसुन!

सिद दोबु तै केन
मिदे कोतो बा लेक;
हतु रटिबु सोभा गिड़िलेद
देलाना बाई एलाबु सुसुन;

चिकन् होयो हिजु: लेन
अपन्-अपन् बु ओरट जन;
उड़: लेरे जीदो लेय तन
देलाना बाई एलाबु सुसुन।

ने जोनोम् ओते दुड़ रे
बारे कोव: हतु तुक रे;
करम् सुबारे सुसुन कोव:
देलाना बाई एलाबु सुसुन।

—अगस्त, 1959।

(हिन्दी)

बहुत दिन में दूसरे से बिछड़ी हैं
एक दूसरे को देखे तक नहीं हैं,
लम: फल की तरह छिटकी हुई हैं
सहेलियो! आओ नाच लें।

पहले)जब) हमलोग थीं (तो)
एक डाल के फूल की तरह,
गाँव को शोभायमान कर दी थीं
आओ, सहेलियों नाच लें!

कैसी हवा आयी—
(और) हमलोग इधर-उधर उड़ गई।
सोचने से तो मन गला जा रहा है
आओ सहेलियों नाच लें।

इस जन्मभूमि की धूल पर
भाइयों के गाँवों में,
करम के अखाड़े में नाच लें
आओ सहेलियों नाच लें।

77. करम

बा को बगैचारे
हुरुम् सुकुसेन् गेय;
ओहरे प्रभु गतिङ्
करे होञ् बगे मेय!

जेटे सिंगी दारु उम्बूल्
जेतय ककी बगेय;
ओहरे प्रभु गतिङ्
अम:रेगे होञ् उम्बुलेन् गये!

नुब: निद दियारे
उरु को सतीन् गेय;
ओहरे प्रभु गतिङ्
अम: रेगेञ् सतीन् गेय।

—बारूडीह, जुलाई, 1959।

(हिन्दी)

फूल की वाटिका में
मधुमक्खी जायेगी ही
हे प्रिय प्रभु!
मैं आपको नहीं छोड़ सकती।

जिस प्रकार गर्मी में वृक्ष की छाया
कोई छोड़ना नहीं चाहता,
उसी प्रकार हे प्रिय!
मैं आपकी छाया में रहूँगी ही।

रात को दिया के लव पर
पतिङ्गे प्राण गवाँ देते हैं,
हे प्रिय!
मैं आपमें अपने आपको न्योछावर करूँगी ही।

78. जी:र बाचन्डु:

(करम)

बा चन्डु: हिजु: लेन
जोतो बा को आला जन,
गतिङ् कुअम: जीदो आला जन रे!

जोतो बा को आला जन
नालो निलो ले लो: तन,
गतिङ्, निद-सिंगी बगेम् गुतु तन रे!

हेन बाते नेय बा
अपिड़ बेड़ तनम् रसिकते
गतिङ् दुकुनुतुम कम सारी लेदरे!

बा चन्डु: सेनो: जन
जोतो बाको गसर् जन्
गतिङ्, अम: जीदो गोसो जन!

निद सिगीम् हियतिङ
तयोम् स: गेम हेत होर:,
गतिङ्, रसिकचन्द्र ओड़ो: कम नमेचरे!

(हिन्दी)

मन का बसन्त

बसन्त ऋतु आयी
सभी फूल खिल गये
प्रिये! तुम्हारा मन खिल गया।

सभी फूल खिल गये,
रंग बिरंग फूल हैं,
प्रिय! रात दिन फूल ही गुंथा करती हो।

इस फूल से उस फूल पर
फुदकती फिर रही हो आनन्द से,
प्रिये! दुख का नाम नहीं जाना था, तुमने।

बसन्त ऋतु चली गयी
सभी फूल झड़ गये।
प्रिये! तुम्हारा मन भी मुरझा गया।

रात दिन सोचती हो
पीछे की ओर देख रही हो,
रसिकचन्द्र कहता है—प्रिये!
यह (बसन्त) फिर नहीं पाओगी।

79. चिटिद् करम

होर अतोम् चम्पा दारु
निद-सिंगी को होरो जद,
बाबू रे!
चम्पा बा दो ककी गोदे रिकय।

कचिबाबुम् लेले जद,
बकड़ी तदको जनुम् ते,
बाबू रे!
चम्पा बादो ककी गोदे रिकय।

कचि बाबुम् ले ले जद,
गोसो तन, गसर् तन,
बाबू रे!
गोसो बारे अलोम् सतीन।

(हिन्दी)

रास्ते के किनारे चम्पा का गाछ जो है
रात दिन लोग उसकी रक्षा कर रहे हैं।
हे बेटा!
चम्पा फूल तो तोड़ने नहीं देंगे।
बेटा! देख नहीं रहे हो?
काँटों से घेरा लगाया हुआ है,
हे बेटा!
चम्पा फूल तो तोड़ने नहीं देंगे।
बेटा! क्या देख नहीं रहे हो?
कुम्हला रहा है, (और) झड़ रहा है,
हे बेटा!
इस मुरझाये हुए फूल पर प्राण मत दो।

80. चिटिद् करम

होर अतोम् चम्पा दारु
बा कन उराय-बराय,
ददाया!
चम्पा बादो गोदे लेगे सनञ।
सोवन् तन मोगो-मोगो
नब कन कुड़म बितर,
ददाया!
चम्पा बादो गोदे लेगे सनञ।
बा रेगेय जी तञ् दो
निद सिंगीञ् हियतिङ्,
ददाया!
चम्पा बादो गोदे लेगे सनञ।

—बारूडीह, मई, 1959।

(हिन्दी)

रास्ते के किनारे चम्पा का गाछ है
उसपर फूल गह गहकर खिले हैं,
हे भाई!
मुझको तो फूल तोड़ने का मन करता है।
फूल से मह मह सुन्दर गंध आ रही है
गंध मेरे हृदय में गूँज रही है,
हे भाई!
चम्पा फूल तोड़ने का मन करता है।
मेरा मन तो फूल ही में है
रात-दिन इसी की चिन्ता करता हूँ
हे भाई!
चम्पा फूल तोड़ने का मन करता है।

81. करम

होर अतोम् चम्पा दारू
उरय-बरय बा कन
दोल सोंगे को दो लाबु सेनोग
चम्पा कोली बाबु गुतुय दोलाबु सेनोग।
सोवन् तन मोगो-मोगो
नब कन गोटा दारू,
दोल सोंगे को दोलाबु सेनोग,
चम्पा कोली बाबु गुतुय दोलाबु सेनोग।
गोदेयाबु सल-सलाते
गुतुयाबु रसिकाते,
दोल सोंगे को दोलाबु सेनोग,
चम्पा कोली बाबु गुतुय दोलाबु सेनोम।

—बारूडीह, जुलाई, 1959।

(हिन्दी)

—रास्ते के किनारे चम्पा का गाछ है
(उस पर) गह-गह कर फूल खिले हैं।
ऐ सहेलियों! चलो हम सब चलेंगी
चम्पक फूल की माला गूँथेंगी, चलो चलेंगी।

(फूल) मह-मह सुन्दर गमक रहे हैं,
समूचे गाछ पर घुली हुई है,
ऐ सहेलियो! चलो हम सब चलेंगी
चम्पक फूल की माला गूँथेंगी, चलो चलेंगी।

तोड़ेंगी (फूल) चून-चून कर
गूँथेंगी (फूल) आनन्द से,
ऐ सहेलियो! चलो हम सब चलेंगी
चम्पक फूल की माला गूँथेंगी, चलो चलेंगी।

82. करम

बिर् बितर् बा सुब
गड़ गितिल् कोदोम् सुब,
निद-सिंगी हो सोखी रुतु सड़ी तन
ओको चैल रुतुए ओरोङ् तन।

रुतु सोखी सड़ी तन
जीरे गुतयलेक गे
ओहोरे ओको चैला
रूतुए ओरोङ् तन रे!

रुतु सड़ी ते
गोकुल् दिशुम् एकेल तन
हायरे, ओको चैला
रुतुए ओरोङ् तनरे!

कचि सोखिम् ठोर् ज:इय
प्रभु गोपाल ओरोङ् तन
हायरे, राधा राधा
रुतुए ओरोङ् तनरे!

अलो सोखिम् कजिय
अञ: जीदो अलय बलय
हायरे, ने सोमय रे
नेकम् दुकु कि:ञ रे!

—खूंटी, दिसम्बर, 1958।

(हिन्दी)

वन में फूल वृक्ष के नीचे
नदी में कदम वृक्ष के नीचे
रात-दिन सखी, बाँसुरी बज रही है
कौन छैला बजा रहा है?

बाँसुरी बज रही है
लगता हृदय में चुभ रही है।
आह! कौन छैला
बाँसुरी बजा रहा है?

बँसुरी की तान से
गोकुल देश हिल रहा है।
हाय! कोन छैला
बाँसुरी बजा रहा है?

ऐ सखी! ख्याल नहीं कर रही हो?
प्रभु गोपाल बाँसुरी बजा रहे हैं।
हाय! राधा राधा के स्वर में
बाँसुरी बजा रहे हैं।

हे सखी! मत कहो
मेरा जी व्याकुल है।
हाय! इस समय
तुमने मुझको ऐसा दुःख दिया!

83. करम

ओचो-ओचो मुकुन्द मुरारि
अलोम् सबिङ् पयलरे दो!

अमदो नन्द बेटा
ओचो मुरारि!
अञे दो जति गोवालिन।

सोबेन् को लेल तन,
गई-चुई गोवाला सोबेन,

अम्दो गियुःगे बनोग
ओचो मुरारि!
अञे दो जति गोवालिन।

सोबेन् को लेले तन,
सिंगी चन्डुः इपिल सोबेन्

अम् दो गियुःगे बनोग
ओचो मुरारि!
अञे दो जति गोवालिन्।

श्री चन्द्रकजी तन
मुरारि गो कए पतिएः

जति पति कए इतुवान्
ओगो सुन्दरी!
अञो गोञ् गोवालन्।

—सितम्बर, 1958।

(हिन्दी)

हे मुकुन्द मुरारि!
मेरी अञ्चल को मत पकड़ो,

तुम तो नन्द के बेटे हो
हे मुरारि!
मैं तो जात की ग्वालिन हूँ।

सभी देख रहे हैं—
गाय-बैल, बछड़े और ग्वाले।

तुमको तो लाज ही नहीं है
हे मुरारि!
मैं तो जात की ग्वालिन हूँ।

सभी देख रहे हैं—
सूर्य, चन्द्र और तारेगण,

तुमको तो लाज ही नहीं है
हे मुरारि!
मैं तो जात की ग्वालिन हूँ।

श्री चन्द्र कहता है—
री! मुरारि नहीं मानता,

जाति-पाति नहीं जानता
री सुन्दरी!
मैं भी ग्वाला बन जाऊँ!

84. करम

नेरे चिन:ञ् हिय कन
होर लेल् गेरे सेनो जन,
गोट निद ओका रोने जन
कलिया नागोर कए हिजु: जन।

रंगा रुतु सड़ी सुगड़
न: सन्ते क सड़ी जन,
ने लुतुर् इपए लुतुर जन
कलिया नागोर् कए हिजु: जन।

हिजु गए नेय मेनते—
गुतु दुकु लेदञ् बोले,
गुतु गलङ् बा बासी जन
कलिया नागोर् कए हिजु:जन।

—बारूडीह, अगस्त, 1959।

(हिन्दी)

व्यर्थ यहाँ मैं आयी हूँ
इंतजार में ही समय चला गया,
सारी रात अकारथ पड़ी रही
कलिया नागर नहीं आये!

रंगीन बाँसुरी की मधुर तान
अब तक कहीं नहीं बजी,
सुनने को ये कान व्यर्थ ब्याकुल हैं
कलिया नागर नहीं आये!

आयेंगे, इसी आशा में
मैंने यत्न से फूल गूँथा,.
गूँथे हुए फूल वासी हो गये
कलिया नागर नहीं आये!

85. करम

(मुण्डारी)

बुरू को टिकुरा रे
दुरङ् लेदञ् अम्चिरे
लोयोङ् रे
रंगा साड़ी ओटङ् तन,
लोयोङ् रे।

बाबा चिरम् रोवा तन
तसद् चिरेम् हेड़ेद् तन,
सय ते,
रंगा साड़ी ओटङ् तन,
लोयोङ् रे!

रसिक चन्दर कजी तन
एन कजी सुकु जन,
रसिक ते,
रंगा साड़ी औटङ् तन
लोयोङ् रे।

—बारूडीह, जुलाई, 1959।

(हिन्दी)

पहाड़ की चोटी पर
मैंने गाया, क्या तुम थी
खेत में?

रंगीन साड़ी उड़ रही थी
(जिस) खेत में!

क्या धान रोप रही थी?
या घास निखा रही थी
तिरछी नजर लगा रही थी
(जहाँ से) रंगीन साड़ी उड़
रही थी खेत में।

रसिका चन्द्र कहता है
वह बात पसन्द की गई,
मन से ही

रंगीन साड़ी उड़ रही है
खेत में।

86. करम

चिमिनडेम् दण लगन
कम् नमिय इनि:।

चोन्दो वोदिनी राधा एल
उदुबमेय ञ् इनि:।।

मेद्द: गोसो: नेमे बेग
रगे रे कए नमोग इनि:।

चोन्दो वोदिनी राधा एल,
उदुबमेयञ् इनि:।।

कमी-उदम् रेम् नमिय
हेड़ेद् तुसङ् रे इनि:।

चोन्दोवोदिनी राधा एल,
इनि: गे अम: प्रभु तनि:।

—बारूडीर, अगस्त, 1959।

कितनी परेशानी सहोगी,
तुम उसको नहीं पाओगी।

ऐ चन्द्रवदिनी राधा!
मैं बता दूँगा (कि वह कहां है)।।

जल्दी आँसू पोछो
रोने से वह नहीं मिलता।

चन्द वदिनी राधा!
मैं बता दूँगा (कि वह कहां है)।।

काम-उद्यम करने में पाओगी,
निराई-गोड़ाई करने में पाओगी।

चन्दवदिनी राधा!
अब तो वही तुम्हारा प्रभु है।।

87. करम

जेटे सिंगी कले कले रे
गड़ गितिल् को दोम् सुबरे
हिड़ि तुकदिङ्।

सोखीरे प्रभु गतिङ् हिड़ि तुकदिङ्!

हेड़ेम्-हेड़ेम् कजी ते
हिड़ि कि:ञय गोमेन्ते
कोरे: बेद किङ्

सोखीरे प्रभु गतिङ् हिड़ि तुकदिङ्!

सोंगे-सोंगे उरि:! गुपी
बगे कि:ञय मुरारी
उकु बगे किङ्।

सोखीरे प्रभु गतिङ् बगे तुकदिङ्!

जरगीदा: तेब: लेन
लारी रिम्बिल् सड़ीतन,
कोरे: चिक किङ्

सोखी रे प्रभु गतिङ् बगेतुक दिङ्!

रसिक चन्द्र इयम् तन
जी प्रभुए इदि केद
रेअे किदिङ्

सोखी रे प्रभु गतिङ् बगे तुक दिङ्।

—बारूडीह, जुलाई, 1959।

(हिन्दी)

जेठ की तपतपाती धूप में
नदी-बालु पर कदम्ब के नीचे,
मुझ को ठग, दिया,

री सखी! प्रिय प्रभु ने मुझको ठग दिया।

मीठी-मीठी बातों में
'प्रिये' कह कर ठग लिया,
कहाँ मुझ को भूला दिया!

री सखी! प्रिय प्रभु ने मुझ को ठग दिया।

साथ साथ चराना
मुरारी ने मुझको छोड़ दिया,
छिप कर चले गये,

री सखी! प्रिय प्रभु ने मुझको ठग दिया।

बरसा ऋतु पहुँची
बादल गरज रहे हैं,
कहाँ मैं क्या हो गयी!

री सखी! प्रिय प्रभु ने मुझको ठग दिया।

'रसिक चन्द्र' सोच रहा है (कि)
प्रभु मेरा मन ले गये
लूट लिये

री सखी! प्रिय प्रभु ने मुझ को ठग दिया।

88. करम

जर्गी दा: तेब: जन
रिमिल् सड़ी तन,
गतिङ्! अम्दो गतिङ्
करेम् लेलो गारे!

तरा होड़ मो बगे केते
सेनो: जनम् एसेकर्गे,
गतिङ्! अम्दो गतिङ्
करेम् लेलोगा रे!

ओड़: दो तम् नुब: गेय
दिया तुकःञ् मेन्दो बनो:,
गतिङ्! अम्दो गतिङ्
करेम् हियातिंगारे!

—बारूडीह, जुलाई, 1959।

(हिन्दी)

बरसा ऋतु पहुँच गयी
बादल गरज रहे हैं,
प्रिये! तुम तो प्रिय
कहीं दिखाई नहीं दोगे!

आधा शरीर छोड़ कर
अकेले तुम चले गये,
प्रिय! तुम तो प्रिय.
कहीं दिखाई नहीं दोगे!

तुम्हारा घर तो अन्धकार है
'दीपक जला दूँ' यह विचार नहीं तुममें,
प्रिय! तुम तो प्रिय
क्या कुछ भी फिक्र नहीं करोगे?

89. करम

दा: दोरे गम तन
गड़ दोरे पेरे: तन
गतिङ् गड़ परोम् कहोञ् सेन् गेय रे!

गड़ परोम् सेपेन् नपम्
जरगी दा: सुसुन् करम्
गतिङ् गड़ परोम् कहोञ् सेन् गेय रे!

कजीम् कुले रेयो
अमोम् हिजु: रेयो,
गतिङ् जरगी दा: दो कहोञ् सेन गेय रे!

—बारूडीह, जुलाई, 1959।

(हिन्दी)

पानी तो बरस रहा है
नदी भी भर रही है,
प्रिय! मैं नदी पार नहीं जाऊँगी।
नदी पार में मुलाकात करना
बरसात में नाचना
प्रिय! मैं नदी पार नहीं जाऊँगी।
बात भी क्यों न कह भेजो
तुम भी क्यों न बुलाने आओ
(पर) प्रिय! बरसात में तो नहीं जाऊँगी।

90. करव

इच: रसी बा रसी
जोरो केन् जोरो केन
होरा होराए लेल् केन् लेल् केन
अहो एन् चैला दो कएगे तुर जन!
रसिक रसी जोरो लेन
नपम् बोरसए बोरस केन
घड़ी घड़ी कोयो: कोयो: गेन
अहो एन् चैला दो कएगे तुर जन!

(हिन्दी)

इचा: फूल का रस
चूता ही रह गया;
रास्ता देखता ही रह गया,
ओह! वह छैला नहीं आया।

आनन्दप्रद रस चू पड़ा
मिलने की आस लेकर
क्षण-क्षण अपने आपको ताकता रहा
लेकिन वह छैला आया ही नहीं।

91. मागे

मोदे तुक होने को
कबु एपेरङा अ्बु।
मोरे दिशुम् गण को
कबु सेपे गेद अ्बु।।

हग बोय गेय बु
मोदे गेबु दुरङे।
कुटुम् कुपुल तनाबु
मोदे गेबु अड़ङे।।

निपिर्-बपगेय कनाबु
रूड़ दपड़ाँ रूपड़ः बु।
अयर् तयोम कनाबु
तपँगी, सेपेन् रूपुड़ः बु।।

—दिसम्बर, 1959।

(हिन्दी)

एक घोंसले के बच्चे
हम सब झगड़ा नहीं करेंगे।
एक देश की हम संतान हैं
एक दूसरे को नहीं सतायेंगे।

हम बन्धु-बान्धव ही हैं
एक में हम गायेंगे।
हम कुटुम्ब हैं; मेहमान हैं
एक ही राग आलापेंगे।।

हम एक दूसरे को छोड़ चले हैं
फिर हम एक दूसरे को ढूँढते चलेंगे।
हम आगे पीछे हो गये हैं
प्रतीक्षा कर या फिर उसके पास जायेंगे
(ओर साथ-साथ चलेंगे)

92. मागे

बाबा एंग, कोदे एंग
एल बोलो बेन् बेग।
बा एंग् कोदे एंग
एल दूबे बेन् बेग।।

अदिङ् दुवर निग कन
एल बोलो बेन् बेग।
दीरी गन्डु अटेद कन
एल दूबे देन बेग।।

—अक्टूबर, 1959।

(हिन्दी)

हे धान माँ, हे मडुआँ माँ!
आओ, तुम दोनों प्रवेश करो।
हे धान माँ, हे मडुआँ माँ!
आओ, तुम दोनों बैठो।।

अन्धार कोठरी की द्वार खुला है
आओ, तुम दोनों अन्दर आओ।
पत्थर का पीढ़ा बिछा हुआ है
आओ, तुम दोनों बैठो।।

93. मागे

लङ चेणें! कलेगा, चिय चेणेंम् ओमाञ चि!
बोचो: चेणे! काजोड़, चिय चेणेम् चेदाञ चि?

कलेगाञ् ओमा मेरे, चिहोम् चिकाय?
काजोड़ाञ् चेदा मेरे, मेरे होम् रिकाय?

कलेगाम् ओमञेरे, पैकी तेञ् इदिलेय।
काजोड़ाम् चेदाजेरे, करमे रेञ् काजोड़ान् तेय।।

—दिसम्बर, 1959।

(हिन्दी)

हे लङ् पक्षी! क्या अपनी कलगी दोगे?
हे बोचो: पक्षी! क्या अपनी काजल दोगे?

कलगी यदि मैं दूँ तो तुम क्या करोगे?
काजल यदि मैं दूँ तो तुम क्या करोगे?

कलगी यदि दोगे, तो मैं पैकी नाचने ले जाता हूँ।
काजल यदि दोगे, तो करम नाचने जाऊँगा उस वक्त काजल लगाऊँगा।

94. मागे

ने ईचा: बा दो, बा उराय-बरय।
ने डिन्डा सोमय दो, सोमय चाली बलिय।।

बा उराय-बरय, रसी लिंगी जोरो तन।
सोमय चाली-ृबलिय, लन्द-ृजगर पारिड़ी तन।।

बा रसी चब जन, बा गसर् गोसो जन।
डिन्डा सोमय टुन्डु जन, लन्द जगर मैला जन।।

—दिसम्बर, 1959।

(हिन्दी)

इस ईचा: फूल के पौधे में, गह गहाकर फूल खिले हैं।
यह कुवाँरी की अवस्था तो चहल-पहल का समय है।।

गह-गहा कर फूल खिले हैं (उनसे) रस चू रहा है।
यह समय चहल-पहल का है, हँसना-बोलना छलकना है।।

फूल का रस(जब) खत्म हुआ (तो) फूल झरकर मुरझा गये।
कुँवारी अवस्था जब पार हुई (तो) हँसना-बोलना मैला हो गया।

95. मागे

बा को वगैचारे, बा उराय--बरय।
को कोते हुरूम् सुकुम् जलातिङ तनय।।
बा उराय-बरय, मोगो-मोगो सोवन।
चेपे: लेम् सुकु-सुकु रसी लिंगी जोरो तन।।

—दिसम्बर, 1959।

(हिन्दी)

फूल के बगीचे में, फूल खिले हैं।
हे मधुमक्खी! कहाँ उड़ फिर रही हो?
फूल खिले हैं, मह-मह सुन्दर गंध दे रहे हैं।
चूस लो मन भर, रस बह रहा है, चू रहा है।।

96. मागे

हेस: जरोम् चब जन मैनो जी
ओकोते लङ् सेनो: ग मैनो जी।
बाड़े गदर् चब जन केयादी।।
चिमय तेतङ् बिरीद केयादी।।

हियतिङ् गेमोनिङ मैनो जी
ओको तेलङ सेनो: ग मैनो जी।
चक तिङ्गे सनञ केयादी
चिमय तेलङ् बिरीद केयादी।।

—दिसम्बर, 1959।

(हिन्दी)

पके पीपल के फल खत्म हो गये,
हे मैना! हम दोनों (अब) कहां चलेंगे?
गदराये बड़ के फल भी समाप्त हो गये
हे केयाद् (पक्षी)! हम दोनों कहाँ उठकर चलेंगे?

चिन्ता करने का मन करता है मैना!
हम दोनों कहाँ चलेंगे।
पश्चाताप करने का दिल करता है केयाद!
कहाँ हम दोनों उठकर चलेंगे।

97. मागे

बिर् सान् दो चब जन
कन: हिलिम् तिङेय?
डाड़ी दा: दो अञ्जेद् जन
कन: तेम् मन्डिय?

बुरु चेतन् पुटुसु सान्
दिया लेक जुलुवोग;
गड़-गितिल-सेतोङ् दा:
दा: सेकेड़ बसङोवोग।

दिया लेक जुलो: रे
चिय: हिली कम् तिङेय?
दा: सेकेड़ बसङो वोरे
चिय: हिली कम् मन्डिय?

—दिसम्बर, 1959।

(हिन्दी)

जंगल की जलावन लकड़ी खत्म हो गई
भाभी! क्या तुम जालाओगी?
डाड़ी का पानी तो सूख गया
'क्या' से (किससे) तुम भात पकाओगी?

पहाड़ के ऊपर पुटुस की लकड़ी
दीया के समान जलती है।
नदी-बालू के झरने का पानी
(वह) पानी जल्दी खौलता है।

(यदि) दिए के समान जलती है
(तो) भाभी! क्यों जलाती नहीं हो?
पानी जल्दी खौलता है तो
क्यों भाभी, तब भात नहीं पकाती हो?

98. मागे

मागे तन् मागे तन्, मागे सुसुन् सेनोः तन।
बा तन् बा तन्, बा सुसुन् बिरिद् तन।
रबङ् तन् को उयुननेत्, मागे सुसुन् हिजुः लेन।
जेटे तन् को उम्बुल नंगेन्, बा सुसुन पयर् लेना।।

—दिसम्बर, 1959।

(हिन्दी)

मागे पर्व मनाते-मनाते, मागे नाच चला जा रहा है।
सरहुल पर्व मनाते-मनाते, सरहुल नाच उठ रहा है।।
जाड़ा से ठिठुरते लोगों को ओढ़ने मागे नाच आया था।
गर्मी से तपते लोगों को शीतलता प्रदान करने के लिए
सरहुल नाच आ उपस्थित था।।

99. मागे

बुरू को टिकुरारे
डिम् चुवाम् गोले तन।
बुरू को जनर् रे
सुड़ियमेम् सिरम्-बोरोएय।।

चिको मेने ते
डिम् चुवाम् गोले तन।
मेरे को नतेने ते
सुड़ियमेम् सिरम्-बोरोएय।।

सोन्सो रोदेम् नमान
डिमबुवाम् गोले तन।
मुरूद् बाम् नमान
सुड़ियमेम् सिरम्-बोरोएय।।

—दिसम्बर, 1959।

(हिन्दी)

पहाड़ की चोटी पर
भुजङ पक्षी! तुम सिसकारी छोड़ रहे हो।
पहाड़ की तराई में
सुड़ियम् चिड़िया! तुम चहचहा रही हो।

किसलिए?
भुजङ पक्षी! तुम सिसकारी छोड़ रहे हो।
किस कारण से!
सुड़ियम् चिड़िया! तुम चहचहा रही हो।

टिड्डी तुमको मिल गई है
(इसलिए) डिग्चुवा पक्षी, तुम सिसकारी मार रहे हो।
टीसू के फुल मिल गये हैं
(इसलिए) सुड़ियम् चिड़िया! तुम चहचहा रही हो।

100. मागे

बुरू जप: जप: ते किंकोड़ो: को इयम,
एदेल् चुटी नीलिको, नीलिको दो को सयद।

चिको मेनेते हो, किंकोड़ो को इयम,
मेरे को नते नेते नीली को दो को सयद।

दुबूत दारु चब तन, किंकोड़ो: को इयम,
बा रसी चबा तन, नीली कोदोको सयद।

(हिन्दी)

पहाड़ की तराई के किंकोड़ो: पक्षी सोच रहे हैं।
सेमल की चोटी पर के भँवरे पश्चाताप कर रहे हैं।

किस कारण से किंकोड़ो: सोच रहे हैं?
किस कारण से भँवरे पश्चाताप कर रहे हैं?

बैठने को गाछ खत्म हो रहा है, इसलिए।
फूलों का रस खत्म हो रहा है, इसलिए।